कृष्णाजन्म

मनबोध



मैथिली अकादमी, पटना

मैथिली अकादमी प्रकाशन : 154

ISBN : -81-85763-30-5

प्रकाशकः
मैथिली अकादमी, पटना

प्रथम संस्करण-1988
प्रति – 1100
द्वितीय संस्करण-2007
प्रति : 500
तृतीय संस्करण-2011
प्रति : 1000
कुल पृष्ठ : 109

मूल्य : = 40.00 (चालीस टाका)

मुद्रक : शोभा प्रिन्टिग प्रेस
नया टोला, पटना-4

परसन

महाकवि विद्यापतिक बाद मनबोध लोकभाषा सिक्त साहित्यक्षेत्रक पृष्टभूमि मे अवतीर्ण होइत छथि । हुनक उर्वर रचनामे मैथिलीक आधुनिक रूपरेखा, परिवर्तित भाव रूचिक वेष-भूषा स्फुट रूपेँ दृष्ट होइछ । कविक काव्य प्रबन्ध पूर्वरंगक संगीतक इंगित पर नहि, छन्द बन्धक उन्मुक्त वातावरणमे, विकसित लक्षित होइछ । एहि दृष्टिएँ आधुनिक मैथिली पर जतेक प्रभाव ज्योतिरीश्वर विद्यापतिक नहि, गोविन्द दास रामदासक नहि, उमापति नन्दीपतिक नहि ततेक मनबोधक पड़ल अछि । ई स्वाभाविको थिक जे भार्षाक्षेत्रक अतिवृद्धपितामह लोकनिक अलक्षित संस्कार सँ अधिक पितामहक संस्कार आधुनिक मैथिलीसन्तति पर विशेष रहय ।

सम्पूर्ण कृष्णजन्म एके छन्दमे गोकुल मथुरा द्वारकाक परिधिमे रचित अछि । मुख्य कथा अछि कृष्ण जन्मक, कंस-बध ओ ताहिसँ रोषित मगधपति जरासन्धक बध पराभवक । भागवत ओ हरिवंशपुराणक आधार पर रचित अछि । काव्यकलाक अलंकार चमत्कार नहि, लोकजीवनक सहज संस्कार अछि । अतएव एकरा लक्षणानुसारी महाकाव्य-खण्डकाव्य नहि, पौराणिक कथाकाव्य कहबे उपयुक्त थिक । भाषाक मौलिकता वा सप्राणता थिक ओहिमे प्रचलित वाग्धारा, तकर प्रयोगमे मनबोध अनुकरणीय मानल जयताह । महिसिक दूध दधि घृत खिरि खाय : बढ़नुक दिन-दिन बढ़ले जाय ।

एखन धरि एकर कतोक संस्करण प्रकाशित भ' चुकल अछि, मुदा एकर नवीन (तेसर) संस्करण छापि अकादमी गौरवक अनुभव क' रहल अछि । शिक्षक-छात्र आ सुधी समाज एहि संस्करणक हार्दिक स्वागत करताह से विश्वास अछि। कथ्यक तथ्य एतबेमे समाहित अछि ।

दिनांक : 25 मार्च, 201

कमलाकान्त झा

अध्यक्ष

प्रकाशिकी

काव्य रचनाक पारम्परिकताकेँ तोड़ि लोकभाषा आ लोकशैलीमे काव्यक समारम्भ कर' वाला मनबोध पहिल कवि भेलाह । मनबोधक भाषामे जादूक अपूर्व चमत्कार अछि । ठेठ मैथिलीमे रागताल विहीन अभिनव चौपाइ शैलीमे कहबी-कहिनी सँ अभिमण्डित वर्णन-वैभव आ उक्ति वैचित्र्यक जे चमत्कार एहिमे बुनल गेल से दर्शनीय आ प्रशंसनीय अछि ।

अठारह अध्यायक एहि कृतिरत्नमे वस्तुतः दसे अध्याय प्रमाणिक अछि । मुद्रा, संज्ञा, क्रियापद, क्रियाविशेषण, नामधातु ओ अनुध्वनिक विलक्षण शब्द प्रयोग एहिमे भेटत । उपलब्ध पूर्व संस्करणक आधारहि पर प्रस्तुत एहि संस्करणकेँ उपस्थित करैत मनबोधहिक शब्दकेँ गुनगुनायब जे-भनमनबोध हृदय जे सूझ, रंगभूमि किछु बरनय बूझ,।

दिनांक : 25 मार्च, 2011

दीपक कुमार सिंह
निदेशक-सह-सचिव

प्रकाशकीय

कृष्णजन्म मैथिलीक पहिल प्रकाशित पोथी अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री ग्रियर्सन साहेब एकर प्रकाशन 1882 ई० मे बंगाल एसियाटिक जर्नलमे कयलनि । किन्तु ओ एहि पोथीक नाम देलनि हरिवंश । एकर लेखकक नाम कहलनि भोलन झा । किन्तु बादमे डॉ. उमेश मिश्र, प्रो० रमानाथ झा, प. सुरेन्द्र झा 'सुमन' आदि विद्वान एहि कृतिक नाम रखलनि अछि–कृष्णजन्म । हिनका लोकनिक मतें एकर रचनाकार छथि मनबोध ।

ग्रियर्सन साहेब मानैत छथि जे मनबोधक निधन 1788 इसवीक लगभग भेल छल । एहि आधार पर आब मानल गेल अछि जे मनबोध 18म शताब्दीक रचनाकार छलाह । प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' हिनका दरभंगाक महाराज नरेन्द्र सिंहक समकालीन मानैत छथि ।

कृष्णजन्म मैथिलीक पहिल प्रकाशित पोथी थिक से त' ऐतिहासिक स्तर पर महत्वपूर्ण अछिए, एहि पोथीक विषय-वस्तु तथा एकर भाषा सेहो विद्वान-समीक्षकक ध्यान आकृष्ट करैत रहल अछि । पोथीक नाम, रचनाकारक नाम, रचनाकारक जन्म आ मृत्यु-तिथि आदि विन्दु पर जहिना मतभेद अछि तहिना एहि पोथीक आकारक सम्बन्धमे सेहो सभ विद्वान एकमत नहि छथि । किछु विद्वान एकरा 18 अध्यायक पुस्तक मानैत छथि त' किछु 10 अध्यायक । विवाद जे हो, कृष्णजन्म आब 10 अध्यायक काव्य-रूपमे मान्य अछि ।

पोथीक नामे सँ स्पष्ट अछि जे एहिमे कृष्ण-जन्मक कथा अछि । कृष्णक जन्म भ' गेलनि आ कथा समाप्त भ' गेल । कृष्णजन्मक ई कथा मनबोध 'हरिवंश' सँ लेलनि अछि । एकरा पौराणिक आख्यान कहि सकैत छी । विद्यापति कृष्ण काव्यक परम्पराक सूत्रधार छलाह । मनबोध सेहो कृष्णक-जन्म कथा केँ अपन काव्यक आधार बनौलनि । मुदा कृष्ण-जन्मक कथा ओतेक महत्वपूर्ण नहि अछि जतेक एकर भाषा । विद्यापति गीतमे कृष्णक वर्णन कयने छथि, मनबोध कथा-काव्य मे कृष्ण केँ स्थान देलनि । एतबे नहि, मनबोध

रचित कृष्णजन्म महाकाव्यक काव्यशास्त्रीय कसौटी पर महाकाव्य भने नहि मानल जाय, मुदा महाकाव्य लेखनक दिशामे ई प्रथम प्रयास छल ताहि मे सन्देह नहि । जेना कहि चुकल छी, एहि सभ विन्दुक अतिरिक्त कृष्णजन्मक भाषा बेसी ठाम ध्यान खिचैत अछि । विद्यापति सेहो अपन गीतमे लोक-भाषाक प्रयोग कयलनि, मुदा मनबोध हिनका सँ आगाँ बढ़ि गेलाह। एहि प्रकारेँ मैथिलीक कविताक इतिहास मे मनबोध एकटा प्रस्थान विन्दुक रूप मे देखल जाइत छथि आ से उचिते ।

कृष्णजन्मक कतेक संस्करण छपल अछि । मुदा ओ सभ संस्करण अनुपलब्ध भ' गेल छल । तेँ मैथिली अकादमी·मैथिलीक पाठक तथा छात्रक सुविधाक लेल कृष्णजन्मक प्रकाशन कयलक । मैथिली अकादमी सँ प्रकाशित प्रथम संस्करण सेहो समाप्त भ' गेल आ ओकर दोसर संस्करणक माँग पाठक द्वारा होइत रहल । हमरा प्रसन्नता अछि जे पाठक आ छात्रक आवश्यकता केँ ध्यान मे रखैत ई दोसर संस्करण प्रकाशित भ' रहल अछि ।

एहि पोथीमे मूल पाठ अछि, ओकरा संगहि चारिटा परिशिष्ट मे सेहो एहि सँ सम्बद्ध सामग्री समाविष्ट अछि । म० म० उमेश मिश्र, प्रो० रमानाथ झा तथा पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' मनबोध आ कृष्णजन्मकेँ जाहिरूपेँ देखलनि अछि से मैथिली संसारमे विद्वान लोकनिक विमर्शक विषय रहल अछि । तेँ अकादमी केँ एहि संस्करण मे उक्त तीनू विद्वानक एहि पोथी सँ संबंधित विचार केँ परिशिष्ट मे राखल गेल अछि ।

विश्वास अछि, कृष्णजन्मक प्रस्तुत संस्करण मैथिली छात्र आ सामान्य पाठक केँ तँ सहजहि, विद्वानलोकनि केँ सेहो उपयोगी बुझायत ।

रघुवीर मोची

पटना,

दिनांक 24/12/2007

(रघुवीर मोची)

निदेशक

प्रथम संस्कारण सँ

प्रस्ताविकी

मनबोध विद्यापतिक बाद पहिल कवि भेलाह जनिक रचना भाषाक स्तरपर सर्वबोधगम्य सिद्ध भेल । हिनक एकमात्र उपलब्ध पोथी 'कृष्णजन्म' अपन भाषाक सहजताकेँ लए कए तथा कथ्यक सरलताकेँ लए कए साहित्य-संसार मध्य लोकप्रिय भए उठल । महान भाषा-सर्वेक्षक डॉ० ग्रियर्सन, महामहोपाध्याय उमेश मिश्र, भाषाक मेरुदण्ड प्रो० रमानाथ झा, महाकवि सुरेन्द्र झा 'सुमन', इतिहासकार डॉ० जयकान्त मिश्र प्रभृति विद्वान-मनीषी हिनक स्पष्ट सत्ताकेँ मुक्तकण्ठेँ सराहना कएने छथि ।

भागवत ओ हरिवंश पुराणक कथापर आधारित 'कृष्णजन्म' मनबोधक एहन कृति प्रमाणित भेल जे तत्कालीन साहित्य-जगतमे प्रचलित शृंगार-प्रधान गीतधाराक विपरीत भए ठेठ भाषा-शैलीक आश्रय ग्रहण कए आगू बढ़ल आ साहित्यमे कथा काव्य-रूपक स्थापना कएल । वस्तुत: ई पौराणिक कथाकाव्य मात्र थिक; आकि महाकाव्य–ई एखन धरि विद्वत्-समाजमे विवादक विषय बनले अछि । विवादक विषय इहो अछि जे अठारह अध्यायमे विभक्त 'कृष्णजन्म' सम्पूर्ण रूपेँ मौलिक अछि आ कि मात्र दश अध्याय धरि । एतबहि नहि, हिनक नाम-गाम, समयकाल आदिक प्रसंग सेहो बहुत रास ओझरौट पढ़ल-सुनल जाइत रहल अछि । ई सभटा विचार एहि वस्तुकेँ प्रमाणित करैत अछि जे मनबोध मैथिली साहित्य-संसारक एक एहन शलाकापुरुष थिकाह जे अठारहम शताब्दीक लगभगमे जन्म लइयो कए अद्यपर्यन्त अपन नवीनता आ अनिवार्यताकेँ अक्षुण्ण रखने छथि ।

एखन धरि एकर कतोक संस्करण प्रकाशित भए चुकल अछि । मुदा हेबनिमे ई अनुपलब्ध भए गेल छल । अकादमी एकर नवीनतम संस्करण, जे प्रो०सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा सम्पादित संस्करणपर आधारित अछि, छापिकेँ स्वयंकेँ गौरवान्वित अनुभव कए रहल अछि । विश्वास अछि जे सुधी समाज अकादमीक एहि संस्करणके हृदयसँ स्वागत करताह ।

पटना

दिनांक 1-5-88 इ०

अध्यक्ष

प्रकाशिकी

मनबोध मध्यकालक एक एहन क्रान्तिकारी महाकवि छथि जे काव्य-रचनाक पारम्परित शृंखलाकेँ तोड़ि लोकभाषा आ लोकशैलीमे महाकाव्यक समारम्भ कयलनि। कृष्णकाव्य जे परम्परा-गीत आ नाटकक माध्यमसँ लोकरंजनमे आकण्ठमग्न छल से आब लोक-रक्षणक वृहत्तर सामाजिक आ राष्ट्रीय संदर्भसँ जोड़ा गेल। मनबोधक 'कृष्णजन्म' कृष्णकाव्य परम्पराक मैथिलीक प्रथम आ अन्तिम महाकाव्य थिक। श्रीमद्‌भागवतक दसम स्कन्ध ओ हरिवंशक विष्णुपर्वपर आधारित अठारहम शताब्दीक एहि अनुपम ग्रन्थरत्नमे कथाक प्रवाह, वर्णनक चमत्कार, दृश्यविधानक रमणीयता, वस्तुक व्यापकता, चित्रणक सजीवता, अलंकारक सहजता, रसक प्रगल्भता ओ भाषाक प्रसादमयता देखिते बनैछ। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश ओ अवहट्टसँ फराक, शास्त्रीयताक लक्ष्मण रेखाकेँ नांघि एवं राग-रंग आ भोग-विलासक रंगमहलकेँ ढाहि एत' लोककंठमे बसल भाषामे लोक-शैलीपर जाहि लोक-मंगलक महान दुर्गक संधान कयल गेल अछि से 'कृष्णजन्म'क सर्वोच्च उपलब्धि थिक। मनबोध प्राचीनता ओ नवीनताक ओहि सन्धि-रेखापर ठाढ़ छथि जे युगान्तरक आह्वान करैत अछि। भाव ओ भाषा दुहू क्षेत्रमे 'कृष्णजन्म' एक युगान्तरक सृष्टि करैत अछि। डॉ० ग्रियर्सनक अभिमत अछि : The poem is deserving of special attention as an example of the Maithili of the last century offering a connecting link between the old Maithili of Vidyapati and the modern Maithili of Harshnath Jha and the other writers of the present day."

सुधी समालोचक प्रो० 'सुमन'क अवधारणा सेहो तदनुरूपे अछि : कविक काव्य-प्रबन्ध पूर्वरंगक संगीतक इंगितपर नहि, छन्दबन्धक उन्मुक्त वातावरणमे विकसित लक्षित होइत अछि। एहि दृष्टिएँ आधुनिक मैथिलीपर जतेक प्रभाव ज्योतिरीश्वर-विद्यापतिक नहि, गोविन्ददास-रामदासक नहि, उमापति-नन्दीपतिक नहि, ततेक मनबोधक पड़ल अछि।...

'अनुग्रहाय भक्तानां मानुषीं तनुमाश्रितः' (श्रीमद्भागवत 10/33/36)–एहि भागवत धर्मक अनुरूप श्रीकृष्णमे ईश्वरत्वक प्रतिष्ठा कयल गेल अछि । **धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-गुगे**'–गीताक एहि स्थापनाक अनुकूले ओ एक अवतारी पुरुष छथि जे लीलाक माध्यमसँ अपन अलौकिकताकेँ सुरक्षित रखैत छथि । हुनक प्रत्येक क्रियाकलापमे देवांशक प्रतिध्वनि अछि । ओ महान धर्मसंस्थापक, असुरसंहारक, लोकरक्षक आ समाजसुधारक राष्ट्रनायक छथि । कृष्णक लोकरंजक रूपकेँ आत्मसात्क' सर्वत्र लोकमंगलक ध्वजोत्तोलन कयल गेल अछि । पूतनाक बध, सकटक भंग, कालिय नागक दमन, प्रलम्बक संहार, गोवर्धन-धारण, कुबलयापीड़क अन्त, कंसक दलन ओ जरासंधक विनासक' वसुदेवक राज्य संस्थापनामे सबतरि इएह इंगित अछि । शृंगारक रसमय भोगवादी परम्पराकेँ छोड़ि एत' भक्तिक विशुद्ध उदात्त स्वरूपक अवतारणा कयल गेल अछि । ब्रजवनिताक रासलीला आदिक वर्णनामे एत' रति आसक्तिजन्य नहि, भक्तिजन्य अछि । मैथिलीमे वात्सल्य रसक अवतार मनबोध कयलनि । बालसुलभ लीलाक प्रसंगमे ई अप्रतिम छथि । हिनक बाललीलामे अपूर्व सहजता ओ आह्लादकता अछि ।

मनबोधक 'कृष्णजन्म' मैथिल-संस्कृतिक उन्मुक्त दस्तावेज थिक; मिथिलाक रीति-नीति, आचार-विचार, विधि-व्यवहार, हाव-भाव, वेश-भूषा, खान-पान, ओढ़न-पहिरन ओ गरिमा-मर्यादाक एत' शब्दचित्र गढ़ल गेल अछि । गामभरि हकार देब, चुमाओन करब, तेल-सिन्नूर बाँटब डोमकछक नाच-गान करब, सोहर गायब, झटका ओ ढेपा फेकब, टेलबा-टेलइक खेल खेलायब, मुँहबौआ आदिसँ धिया-पूताकेँ डेरायब, मृतकक स्पर्श भेने गंगाजल लेब, भदवा मानब, फरमाइसी भार-दोर पठायब, गोरहापर चढ़ि मधुर दृश्यक अवलोकन करब, सरौं आदि खेलायब, अरिगह-करिगह खुनब ओ विभिन्न अवसरक आनुरूप आँचलिक साज-सज्जा तैयार करब 'कृष्णजन्म'क विशेषता थिक । मिथिलाक माटि-पानिक एतेक बहुरंगी छवि अन्यत्र दुर्लभ अछि । कथ्यक रूपमे धर्मप्राण मैथिल जनताकेँ अधर्मसँ निवृतक' भागवत धर्ममे प्रवृत कयल गेल अछि । दुःख-द्वन्द्वसँ परितापित मानवात्माकेँ प्रेमक पारसमणि ओ उज्ज्वल नीलमणि भक्तिक एहन अमोघ रसायन देल गेल अछि जाहिसँ ओ अनायासहि एहि भवसागरसँ पार उतरि सकय ।

मनबोधक भाषामे जादूक अपूर्व चमत्कार अछि । ठेठ मैथिलीमे राग तालविहीन अभिनव चौपाइ शैलीमे कहबी-कहनीसँ अभिमण्डित वर्णन-वैभव आ उक्ति-वैचित्र्यक केहन चमत्कार बुनल जा सकैए से एत' सर्वथा दर्शनीय अछि । लोक-शैली आ लोक-शिल्पमे जनसाधारणक भाषामे महाकाव्यक गरिमामय आख्यान गढ़ल जा सकैए से एत' देखबाक वस्तु थिक । मिथिलाक धरतीपर कृष्णोपाख्यानक भक्तिपक्षकेँ कण्ठ-कण्ठ आ जन-जनमे लोकप्रिय बनयबामे मनबोधक जोड़ा नहि अछि । फलत: मनबोधक 'कृष्णजन्म' एक एहन कालजयी कृति सिद्ध भेल जे मैथिली साहित्यक आधुनिक मंचपर अपन पूर्ववर्तीकेँ विन्यस्त आ उत्तरवर्तीकेँ उपन्यस्त करैत अछि । महाकवि विद्यापतिए जकाँ भाषाक संक्रान्तिकालीन सिंहद्वारपर विराजमान मनबोध प्राचीनताक कुहेसकेँ नवताक स्वर्ण-प्रभातमे संक्रान्त करैत छथि । देहलीदीपकन्यायसँ ओ पूर्वक रिक्तिकेँ अपन आलोकरश्मिसँ परिपूरित ओ अपरक क्षितिजकेँ समुद्भासित करैत छथि । पौराणिक आख्यानमे युगधर्मक माटि-पानि भरल गेल अछि । परम्पराबद्ध रहितो भाषा, भाव ओ शिल्पमे परम्परामुक्त प्रयोग कयल गेल अछि । परिणामत: मनबोध नवयुगक दुआरिपर युगचेता, उपजीव्य आ पथप्रदर्शकक काज करैत छथि । कमसँ-कम आधुनिक मैथिली महाकाव्यक इतिहासमे मनबोधक अवदान निस्सन्दिग्ध अछि । 'देखन को छोटन लगे घाव करे गंभीर' हिनकामे चरितार्थ अछि । ई सरिपों गागरमे सागर भरलनि । हिनक भाषा सरल, सरस, सुरुचिपूर्ण आ हृदयग्राही अछि । प्रवाह आ संवेग हिनक भाषाक प्रमुख गुण थिक ! प्रसाद गुणसँ गुम्फित हिनक अभिव्यक्तिमे उपमा-उत्प्रेक्षादि अलंकार अनायासे सोनमे सुगन्ध अनैत अछि । प्रसंगानुकूल शब्दक विन्यास, वर्णनक चमत्कार ओ ठेठ शब्दावलीक प्रयोग हिनक मुख्य विशेषता थिक । भावक वैशद्य, रसक परिपाक, अनुभूतिक प्रगल्भता आ अर्थगाम्भीर्यक अपेक्षा हिनकामे कथाकाव्य अनुरूप अभिव्यक्तिकौशलपर बेसी जोर देल गेल अछि ।

आद्यन्त मैथिली भाषामे निबद्ध 'कृष्णजन्म' कृष्णकाव्य-परम्पराक सर्वोच्च उपलब्धि थिक । कथाकाव्यक समग्र सौन्दर्य एहिमे देखल जा सकैए । गतानुगतिकता आ प्रसिद्ध प्रस्थानसँ विच्छिन्न एहिमे प्रयोगक अपूर्व अन्विति, कथनक धारावाहिक इंगिति आ नवताक अभिव्यक्ति अछि । शास्त्र ओ

सिद्धान्तक दृष्टिएँ ई भने झुझुआन लागय मुदा शिल्प आ प्रयोगमे ई बेस भरिगर अछि । आजुक संदर्भमे ई भने हल्लुक बुझाय मुदा अपन रचनाकालमे ई समयसँ बहुत आगाँ अछि । कालिक, भाषिक आ देशिक संदर्भमे 'कृष्णजन्म'क महत्त्व अकाट्य रहत । अठारह अध्यायक एहि कृतिरत्नमे वस्तुत: दसे अध्याय प्रामाणिक अछि । आशा अछि; मैथिलीक मर्मज्ञ पाठक अकादमीक एहि अभिनव संस्करणक स्वागत करताह ।

पटना

1-5-1988 इ०

देवकान्त झा

निदेशक-सह-सचिव

प्रथम अध्याय

प्रणमो गिरिवर-कूमरि-चरन
जे बल कविसभ त्रिभुवन वरन
हमहु कयल अछि मन बड़ गोट
कृष्ण-जन्म-परिनय नहि छोट
कोन पर होएत तकर निरबाह
एखन लगै अछि अगम अथाह
होइत कदाचित हो पुनु नीक
नहि हो तकरो शङ्का थीक
तेँ डर पुनु पुनु मंगल करिअ
हरिपदकमल हृदय हम धरिअ
धरनी भार बेआकुलि भेली
सुरभिरूप धय सुरपुर गेली
नहि किछु ओतहु काहुसँ भेल
धरनिक संग सबहु जन गेल
ब्रह्मलोक ब्रह्मा काँ कहल
ओतहु मनोरथ ओहने रहल
संग देव ब्रह्मा भेल आगू
तनिका पाछाँ धरनी लागू

छीर-समुद्र-तीर सभ गेल

अञ्जलिबद्ध ध्यान धरि लेल

सुरतरु कानन मनिमय गेह

लछमि नरायन देखल सदेह

कमलासन किछु कहबा लागू

ओहि अवसर धरनी भेलि आगू

भार दुबरि तन थर-थर काँप

बजइत नोर नयन दुहु झाँप

कहय लागु धरनी हरि हेरी

हम हएब मगन रसातल फेरी

अमर समर जत जुझल असूर

तत जनमल अछि परिजन पूर

हय हाथी हथियारक भार

गिरि कानन बरनय के पार

सर्वसहा नाम सँ आज

सपथ करिअ हम अयलहुँ बाजं

नाम अनाथक सारंगपानी

सरन दिअ सरनागत जानी

करुनामय काँ करुना भेल

धैरज बहुत धरनि काँ देल

धरनी किछु दिन धैरज धरब

हम अवतरब भार सब हरब

मथुरा बसथि देवकी वसुदेव
तन्हिका भवन जन्म हम लेब
ई सुनि सभक जुरायल कान
अन्तरहित भेल श्रीभगवान
जे परि जन्म जतय जे लेल
पहरेक तकर घमर्थनि भेल
इन्द्र अंश अरजुन अवतार
भीमसेन भल पवनकुमार
धर्म युधिष्ठिर काँ बुझि लेब
अस्विनिक अंश नकुल सहदेव
हरि अनुमति लय ई मत भेल
तखन अमर अमरावति गेल
जोगनिन्द जग ईश्वर जानी
तखन बजाओल सारंगपानी
कहल तुरित तोंहे जाह पताल
आनह छओ गोट दानव बाल
बेरि बेरि देवकी गर्भ बसु सर्व
अहि छबहुक ओतबए भवितव्य
सातम संकरखित कय लेब
देवकी सँ रोहिनी काँ देब
पुरुष पुरातन परम उदार
ओहओ हमहि हलधर अवतार

आठम बेरि हम अपनहि आओब

जेहन बनत पुनु तेहन बनाओब

जसोमति भवन जन्म तोँहे लेब

तोहि मोहि बदल करत बसुदेव

रोदन सुनि रच्छक जे रहत

जागत जाय कंस सँ कहत

कंस आबि तोहिँ लेत उठाय

बल सँ पटकत पाथर लाय

अलगहि उड़ि तोँहे जायब अकास

ई कहि इन्द्रभवन होयत बास

कथि लय कंस पटकलह मोही

से जनमल अछि मारत तोही

दुर दुर निरदय ई तोर चाली

एकर उचित फल पयबह काली

भव 'मनबोध' पाछु किछु रहल

कथा प्रसंग आगू हम कहल



द्वितीय अध्याय

कमलासनसुत सिबक इआर
श्रीभगवानक बहुत पिआर
कहल विसारद नारद मूनि
अयलाह सकल सुगा जकाँ सूनि
छीर-समुद्र-तीर जे भेल
से सब बिहुँसि बिहुँसि टुसि देल
देवकी काँ जे आठम बाल
से होएत कंस तोहर जिव-काल
सुमिरह कंस अकासक बानी
से दिन लग तोहि पहुँचल आनी
ई सुनि कंस खर्ग लए ठाढ़
सिबसिब देवकिक जिब परु गाढ़
अति निरबंस कंस एह भाख
कँटगर तरु केओ अङना राख
करजोरि बिनति करथि बसुदेव
जिबय दिअ बरु बालक लेब
अपना जिब सँ तनय परान
पर थिक से जग के नहि जान
यदि संसय होअ जन्मक काल
बान्हि धरिअ बरु बन्दीसाल

कयल कंस वसुदेव विचार
कर्मक लिखल मेटय के पार
बुझलन्हि कंस विधाता बंक
रच्छक दय कें भेलाह निशंक
बन्दीसाल-पाल कहि गेल
छओ बालक कालक बस भेल
सातम गर्भ पात भेल सोर
से बालक गेल रोहिनिक कोर
जोगनिन्द किछु करु परहार
मातल भुतल सुतल रखबार
भादव कृष्ण अष्टमी जानि
राति महाप्रभु जनमल आनि
चक्र गदा कर सरसिज संख
देखि देवकी मन उपजल झंख
कह बसुदेव देवकी कर जोरि
कंस बाघ हम हरिनी खोरि
रूप चतुर्भुज दिअ हरि छाड़ि
नारद देत गए उकठी लाड़ि
दीनक बन्धु अनाथक नाथ
मानल कहल रहल दुइ हाथ
जाहि बेरि जन्म महाप्रभु लेल
तखन अन्हार एहन गोट भेल

सूइ लय बेधिअ गाँथिअ ताग
हाथ छुबिअ तओँ हाथहिँ लाग
गरजि सघन घन बरिसय बारी
तैँ फनिपति फन देलन्हि पसारी
लागल झड़ी भुलल सब दीग
पशु-पक्षी सब पड़ल अदीग
सूर्यसुधाकर खोजलोँ ने पाबिअ
कमलकुमुद निसिवासर जानिअ
साहस बड़ वसुदेवक ताही
गोकुल केँ हरि एलाह निबाही
तखनुक हर्ष कहबगय काहि
ओहनि दुर्ग जमुना भेलि थाहि
जसोमति सुतलि जोगनिन्द माति
अदलबदल भेल सुतली राति
ओ कन्या लय भेजा देली
से जे टा कहिनी कहि गेली
जे किछु भाखल नारद मूनि
कंसक हंस उड़ल से सूनि
निज अनुचर सभ लेलन्हि हकारि
बड़ि अगलहि तहाँ पुतना नारि
सभ मुख हेरि कंस हलु भाखी
बालक हनिअ कतहु जनु राखी

धय कहु पटकब पाथर लाय

देखब सम्भारव उड़ि नहि जाय

जे बालक होथि बड़ पकसोठ

अरबथि तनिक ममोड़ब ठोठ

कंस कहल से सबहुँ सुनल

कए देब सबहुँ सबहुँ सँ कहल

निज अनुचर सँ कयल बिचार

तखन कंस गेल कारागार

ई कहि देवकी वसुदेव फोयल

दोष न हमर विधाता खोयल

अनतहि जनमल जे देत खेद

व्यर्थ कयल तोर बंसक छेद

लाजक लेल मुख हेरिओ न होय

के धरि बान्हि बहिनि बहिनोय

छमा करब अनुचित बड़ भेल

ई कहि कंस सयन घर गेल

जखन जसोर्मा ाकाँ निन्द टुटल

मन भरि रंक रतन जनि लुटल

आनन्द नंदक उर न समाएल

हर्षक नोर नयन भरि आएल

होइत प्रात भेल नग्र हकार

तखनुक उरष कहए के पार

तेल सिन्दुरसभ देलन्हि आआरी
चरि चरि चुरु देल मथा गोआरी
हरि महिमा कथुहुक नहि खागी
ठेहुन तर सिन्दुर गेल लागी
केओ घर आँगन केओ दोआरी
कय ठाम डोमकछ नाचय गोआरी
सोहर गाब भाव बेकताब
नचितहिँ जाए पुनि नचितहिँ आब
नाचकाछ सभ तरहक भेल
अपन अपन सभ आँगन गेल
एकदिन जसोमति निन्द अलसाय
सूति रहल हरि हृदय लगाय
नन्दमहरिकाँ सुतला जानि
पुतना तखन तुलाएलि आनि
सरसर कए घर पैसलि धाय
बैसलि विषदुध देलक पिआय
हरि भरि पेट पिउल दुध हरषी
सोनित सहित प्रान लेल करषी
आरतनाद बहुत बड़राए
कटला तरु जकाँ खसु अड़राए
सबहु देखल आबि जे छल जागल

तारक तरु जनि लबनी लागल
तखन जसोमति निज सुत लेल
आगेमाइ आगेमाइ अजगुत भेल
कीदहु पढ़ि हरि नन्द चुमाओल
आसिख दय हरि हृदय लगाओल
एकदिन भए गेल बिधिक संयोग
जशोमति लए गेलि सकटक दोग
ततय सुतओलन्हि आकुलि भेली
कारजबन्ति कतहु चलि गेली
ओहन महाप्रभु ओहन बिकट
टकटक हेरथि सकटक निकट
असरन सरन चरन देल फेकी
उनटल सकट ककर सक टेकी
भए गेल बाँक टाँक सभ टुटल
सकटक अकट-बकट सभ छुटल
कड़कड़ सुनि बड़बड़ जन धाओल
कहि नहि सकट कओन उनटाओल
सिसुगन कहथि सपथ हम करिअ
हिन उनटाओल हम देखितहि रहिअ
भन 'मनबोध' हरि अवसर पाओल
रति एक महिमा अपन जनाओल

[

तृतीय अध्याय

कतोएक दिवस जखन बिति गेल
हरि पुनु हथगर गोड़गर भेल
से कोन ठाम जयत नहि जाथि
कय बेरि अंगनहुँ सँ बहराथि
द्वार उपरसौँ धरि धरि आनी
हरखथि हँसथि जसोमति रानी
कय बेरि आगि हाथसँ छीनु
कय बेरि पकला तकला बीनु
कय बेरि साँप धरय पुनि जाथि
कय बेरि चून दही बदि खाथि
कौसल चलथि मारिकहुँ चाल
जसोमति काँ भेल जिबक जंजाल
कहलन्हि सिखबह हमरहि ताहि
टाँग तोरिअ तँ केओ हम नाहि
मानिअ नहि एते एत बरजीअ
अहीँ हमर सभकेओ भेल छीअ
ई कहि बन्हलन्हि उखरि लगाए
कहलन्हि पुत रिंग जाउ तोँ पराए
भेलिहि निसंक समय हरि पाओल

भरि भरि पाँज उखरि ओँघराओल

गुड़कल गुड़कल भिड़ुकल जाय

जतय अछल दुइ ब्रिच्छ अकाय

जमला–अर्जुन कमलानाथ

जुगुति उषारल छुइल न हाथ

खसल महातरु हँसल मुरारि

भेल अपात जगत परचारि

आँगन सुन देखि नयन नोरायल

जसोमतिकाँ हिअ हाथ हेरायल

की फल भेल मोहि एतेक अगोरि

ने हरि ऊखरि नहि ओ डोरि

कनइत जसोमति पहुँचलि जाय

नेरु हेरएने जेहने धेनु गाए

तरुक सबद सुनि दौड़ल नन्द

तेजि देल गाय परओ बरु बन्द

को तरु खसल बसात न झाँट

आज होइत मोर बारह बाट

जसोमति फोए हरि हृदय लगाओल

हरि दामोदर पदवी पाओल

अंचल झाँपि भवन लए गेली

नयन बरसि जलधर तह भेली

आनन चुम्बि पयोधर धएल

सबहुँ सखी मिलि मंगल कएल

भन 'मनबोध' हम अपन गेआन

कयलन्हि बालगोपालक धेआन

चतुर्थ अध्याय

एक दिन नन्द जिअ सन्सै बाढ़ि
आगाँ महरि जसोदा ठाढ़ि
गोकुल केर उतपात बिचारि
मूक बैसल सभ लोक हकारि
सकल पंच मिलि रचल बिचार
होइछ उपद्रव बारंबार
अहोनिस चौदिस संचर ब्रीक
पुर परिजन लगइछ हत स्त्रीक
एहिठाम आब उचित नहि बास
उपटि बसिअ बृन्दावन पास
ओहि ठाम गिरिवर गोगण सूझ
ग्वाराकेँ से ताकए बूझ
अगिलहि दिन उपटल सभ सपटी
जनि छन मध्य बखो गेल उपटी
ओहि नगरी तह एहो निक भेल
जनि हरिचन्दपुरी उगि गेल
सातम बरस वयस हरि भेल
कौखन ख नहि खेड़िक लेल
कौखन नाचथि गावथि गीत
खयताहनि से परलय बीत

एक दिन हरि हलधर दुहु भाय
नन्द अपन लग लेलन्हि बजाय
बाभन पोथी छत्री तीर
नेनहि सिख चरवाहि अहीर
ब्रह्मा सिव सेवक प्रभु जाहि
तनिका नन्द सोपल चरवाहि
हरि हलधर दुहु हरखित भेल
लय बछरू वृन्दावन गेल
सुरनागरि गोकुल अबतरली
धनजन भरलि बहुत अबगरली
सबकाँ केबल कृष्ण सोहाथि
सासु ननदि घर कतेक कोहाथि
केओ नहि मानथि काहुक हटल
सबहुक मन हुनकहिसँ अटल
एक दिन हरि चरवाहक साथ
कालीह्रद गेल श्रीब्रजनाथ
ह्रद देखि कएलन्हि ह्रदय बिचार
एहि अछि काली फणी दुर्व्वार
पसु पच्छी केओ नवय न पानि
जमुनाह्रद बिखबत कए जानि
तीरक त्रिन तरुअर जरि गेल
बिखहिक आगि शिखा कए लेल

आज करिअ अब एकर उपाय
बैसलि नहि जल पैसिअ धाय
कदमक तरु चढ़ि भड़कछ मारि
आँखि मूनि दुहु कुदल मुरारि
बाहु बजारि कएल बड़ दाप
तकर सबद सुनि दौड़ल साप
परवत सन फनि कर फुफुकार
एकसर नहि संग कुल परिवार
परम तेजाएल आएल जूमि
घेरि लेलक घड़िएक घुमि घूमि
सधलक गए पुनि बन्धलक गात
कएलक अजगुत धएलक दाँत
जमुनाह्रद भेल चापश्चाप
पानि सुझए नहि सापहि साप
घड़िएक कृष्ण बड़े दुख पाओल
सर्पराज बड़ दर्प देखाओल
से देखि संग सखा सभ पाओल
जाय कहु गाम गोहारि लगाओल
दौड़ल नन्द जसोमति राम
कागपुत्र केओ रहल न गाम
अति आकुल सभ पहुँचल धाय
कानथि जसोमति धरणि लोटाय

एकटक नन्द तनय-मुख ताक
चित्र लिखल जनि सास न बाक
गोप बधू कह मन अनुमानि
एक दुइ महिमा कृष्णक जानि
प्रान कुसल छथि सारंगपानि
मुख-रुचि रतियो ने भेल मलानि
दिनमनि बिनु दिन, शशि बिनु राति
हरि बिनु ब्रज तीनू एक भाति
बिनु दामोदर जे ब्रज जाय
धिक धिक तकर बाप ओ माय
सबहु परिअ जमुनाजल धाय
एहिसँ सुखद साप बरु खाय
घड़िएक ककरहु किछु नहि फुरल
पहरेक अड़रा कड़रा परल
हलधरकाँ मति अति अगुताएल
हरि देखि आँखि रुधिर भरि आएल
महिमा कहल चेताउनि देल
बानी अपन तखन हरि धएल
छान्ह वान्ह सभ फोएल बलहि
परम विरुद्ध जुद्ध भेल जलहि
मानुख भए कत पौरुष करथु
सबगोट फनि पुनु कएगोट धरथु

जित कहुँ मझिलहि फनि हरि ठाढ़

कए देल पएर वज्र सम गाढ़

देखि हरषित भेल नन्द सभृत्य

घड़िएक कएलन्हि ओहिना नृत्य

करितहिँ नाच एहन कए मलल

फणिसँ सोनित कनकन चलल

सोनित सरित तुरत बहि गेलि

जमुना छुटलि सरस्वति भेलि

नागिनि कहए नर्म भए बानी

स्वामि दान दिअ सारंगपानी

सरनागत बिधबा अछि बाध

बिनु जनने भेल एत अपराध

कतए महाप्रभु अति बल दाप

कतए अलपमति विषधर साप

ई सुनि हरि मन भेल अनुराग

कहए लागल किछु काली नाग

छेमिअ छेमिअ श्रीपति मोर दोख

हम अपराध कएल भरि पोख

सरनागत मति हम अबधरिअ

हतबिख भेलहुँ कहिअ से करिअ

चलिअ न कतहु बहुत दुख सहिअ

गरुड़क डर हम एहि ठाम रहिअ

ई कहि चुप भए रहल बेआल

कहए लागु किछु दीनदयाल

हमर चरण खगपति जँ देखत

बिसरत बएर बन्धुकए लेखत

एहिठाम आब तोर नहि निरबाह

भृत्यसहित तोँ सागर जाह

कए परनाम चलल ततकाल

जत छल जमुनाह्रद मह ब्याल

भृत्य सहित सभ सागर गेल

तखान सुखाद ईहो ह्रद भेल

जसोमति नन्द कहल अबधारी

जनि जनमल छथि आजु मुरारी

कालीदमन पढ़त जे सुनत

से जमकेँ त्रिनबत कए लखत

भरि जीवन धन भोग बिलास

अन्त करत बैकुण्ठ निवास

भन 'मनबोध' सभ हरखित भेल

गीत-नाद करितहि ब्रज गेल



पंचम अध्याय

एक दिन हरि हलधर दुहु भाए
शिशुगन संग लए तरुवन जाए
तारक सौरभ पहुँचल आए
लागल सबहुक जिब पनिछाए
ककरहु झटहा ककरहु चेप
तार न खसए खसए मुह सेप
से देखि हँसए लागल कमलाछ
हलधर धएल हिलाओल गाछ
धेनुक पहिनहि आएल बिचारि
खररुप धए तरुबन रखबारि
धरधर सुनि कहु परम तेजाएल
रेकितहिँ धनछी फेकितहिँ आएल
लग भए हललक लात चलाए
हलधर काँ लपटाएल बलाए
धरि धनछी भरि बल घुरुमाए
मारल गए पुनु तार लगाए
हलधरसँ खल भल फल पाए

पितर भितर मिझराएल जाए
जन दुइ तिनिकाँ कृष्णहु धएल
धए कहुँ तारक झटहा कएल
तखन सबहु मिलि खएलन्हि तार
आँगन लएला एकहक भार
एकदिन ब्रजमे भल खेड़ि भेलइ
नाम तकर थिक टेलबा-टेलइ
हारि-जीति ओहि ओतबए निबह
जे जित तकर भार से उबह
बूझि प्रलम्ब धम्म दए आएल
छल-बल ए पुनि खेड़ि खेलाएल
कठिन उठाए कठा दस गेल
बाढ़ल तखन बड़े गोट भेल
हलधर हलल गोहारि लगाए
कृष्ण कृष्ण मोहि हरने जाए
हरि कहु हलधर होउ समधान
कतहु हरल जाए पुरुष पुरान
के अछि एहन अहाँकेँ हरत
घड़िएक मध्य अपन सुख करत
हलधर तखन अपन बल बुझल

एकहि मुका प्रलम्बे जुझल
सभ दौड़ल जत गोपक बंस
गलबल कए बल करए प्रसंस
कतोएक दिवस जखन बिति गेल
इन्द्र-पुजा दिन उपगत भेल
तखन कृष्ण पुछलन्हि सभ बूढ़
किअए लोकनि भेल छिअ मतिमूढ़
तखन इन्द्र गुन कहलन्हि नन्द
सभटा खण्डलन्हि आनन्दकन्द
सुरपति-पूजन मन दिअ छाड़ी
से पुज जकरा खेतीबाड़ी
गोपजाति की कर पुजि देव
भाव भगतिसँ गिरिवर सेव
कोपित परवत कर उतपात
बाघ सिंह रूप धए कहु खात
बोल दुहु कृष्ण विष्ण भए कहल
से बुझि इन्द्रक पूजा रहल
नाना नेओज सबहु मिलि रचल
पूजल जाए गोवर्द्धन अचल
एक अवतार तखन अवतरण
हसि हसि परवतसँ पगु ढरल
जत पओलन्हि खएलन्हि तत वस्तु

आशिख दए कहलन्हि शुभमस्तु
नारद जाए सरेश बुझाओल
गोकुल पूजा गोप उठाओल
जखन सुनल सुरपति मखभंग
उठि गेल आगि लहरि गेल अंग
मानुष जातिक सोखी एत
हमरो काज भंग कए देत
तखन इन्द्र मेघ लेलन्हि बजाए
सबकाँ कहलन्हि गोकुल जाए
पाथर बज्र निरन्तर बृष्टि
गोपक लोप करह गए सृष्टि
मेघक नृप संवर्तक नाम
उजड़ि चलल कए लेलक सलाम
छपन कोटि मेघक दल चलल
ठनका ठनक तकर उठ अनल
घन घुमि-घुमि लेलक ब्रज घेरि
जनि झपटल अछि बाज-बटेरि
कत बरनब बरखा रितु पाटी
प्रलयकालसँ थिर नहि घाटी
गोपी गोप महिस नेरु गाय
जाड़क लेल सभ गेल टिरुआए
पाथर बज्रक दारुन चोट

ठामहि घुरुमि मुइल कए गोट
त्राहि कृष्ण कहि-कहि लग आब
किदु आब चरण सरण नहिँ पाब
जनिकर नाम लेइत छुट गाढ़
से अपनहि एहि ठामहि ठाढ़
सिन्दुर बिन्दु चोट भेल माटि
अति सुन्दर चुनरी गेल फाटि
राधा आदि जखन लग आइलि
से देखि कृष्णक आँखि नोराइलि
मानुषभाव तखन देल छाड़ी
लेलन्हि गोबर्द्धन अचल उपाड़ी
गिरिबर छत्र जखन हरि धएल
गोकुल सकल निराकुल कएल
पर्वत खसल तकर डर मानि
केओ जनु रह सभ पहुँचओ आनि
ई कहि सात दिवस जिउ जाँति
उद्ध्र्ववाहु रहला दिन राति
गोपी गोप महिस नेरु गाए
हरखित भेल सब गिरि तर जाए
तिमिर तिरोहित भेल हरि जोति
केओ नहि बुझल बृष्टि भेल ओति
सात दिवस उतपातक बात

बहल रहल नहि तरुअर पात

आठम दिन सभ मेघदल गेल

आहर कए सभ बाहर भेल

धरि देल गिरि हरि ठामहि ठाम

ओहि दिन सोँ गिरिधर भेल नाम

लागल सभ परसंसा करए

लगइछ जेहन देब अवतरए

पुतना तरुअर काली नाग

एत दिन से बड़ अजगुत लाग

एहि बेरि संसए लाग विसेखी

कृष्णक जन्म अमानुष लेखी

के ई थिकाह ककर अवतार

संसय बस भेल सकल गोआर

संसय अन्त कोनहु नहि पाओल

तखन कृष्ण पुन मोहनि लगाओल

जे गोबर्द्धन पढ़ मन लाए

भव-सागर तरि हरिपुर जाए

तनिक कष्ट सभ झट दए छूट

भन मनबोध नित्य सुख लूट



षष्ठ अध्याय

सारद ससधर जगमग राति
देखि हरि गेलाह मनोरथ माति
राधा पदुमिनि महरो आइलि
संग एक जूथ सुमन लए आइलि
वृन्दावन बिच भए गेल रास
ओहि दिनराति ओतहि भेल बास
दुइ गोपी बिच एक मुरारि
दुइ कृष्णक बिच एकहक नारि
ऐँ परि रासक मण्डल भेल
केओ कह निसि जुग बिति गेल
रासक रस हरि छल बड़ मगन
से रस असुर कएल अछि भगन
गोँबर गोँत सगर लपटाएल
बलबस गाए सतबितहिँ आएल
मूनल आँखि दहो दिस दौड़
परबत सन उच कान्ह कन्हौर
ओहन बरद गोट कोनहु न दापी
देखि रहल नहि सभ गेल काँपी

सिंहनाद कए हरि हलु डाँटि
फेकए लागल पाछु कए माँटि

कए सिंग सोझ ढुलक मुदि आँखि
हललन्हि कृष्ण सिंग धए राखि

हरि धरि भरि बल हनल थकाएउ
मारल ठेहुन उदर तकाए

सिंग उपारि लेल तसु बाम
से लए मारि खसाओल ठाम

मुइल असुर भेल बड़ उपकार
उतरए लागल भूमिका भार

नारद मुनि काँ एतबए बृत्ति
कलह लगएवाँ बड़ सत कृत्ति

एक दिन कंसक आँगन जाए
कहलन्हि सकल बनाए बनाए

जे परि पहरू सुति गेल माँति
वसुदेव बदल कएल जेहि भाँति

जन्म दिवस सोँ जे हरि कएल
कालीदमन गोबरधन धएल

सभ कहि कहलन्हि करिअ उपाय
सत्रु दिनहु दिन बढ़ले जाय

झकझक सुझरछ एक दिन खोएत
ओ बालक घर घालक होएत

कंस नृपति सुनि लागल कहए
पहिनहिसँ जिब दुग-दुग करए
आरे-आरे अनुचर तोँहि मोर भाए
तुरत केसिकेँ दएह बजाए
एक दिन ओह मानथु मोर पोस
सब सोँ हुनकर बाढ़ि भरोस
ओहि अबसर केसी चल आएल
पौरुष अपन बहुत बड़राएल
मारब गए हम काल्हि बथान
ई कहि केसि कएल प्रस्थान
कंस तखन अक्रूर बजाओल
आदि अन्त बिरतान्त जनाओल
सभ यादव खेदव तुअ छाड़ी
सिसु दुहु मारि नन्द लेब डाँड़ी
गाय-महिसि सरकार लगाएब
लुटब सकल ब्रज जत धन पाएब
दुर्मति उग्रसेन बसुदेव
मारब तखन बएर हम लेब
तुअ अनुमति लए भोगब राज
आज करिअ मोर अभिमत काज
करब सहोदर सम परिपाटि
प्रातहिँ आध देस देब बाँटि
करब चतुर्दस धनुखक जाग
आनिअ न्योति बिलम्ब न लाग

हरि हलधर वसुदेवक तनय
निज भुजबल ककरहु नहि गनय

चाणुर मुष्टि हमर अछि माल
त्रिणवत गुनत हनत ततकाल

करिबर अछि मोहि कुबलय पीड़
मन कर तोँ दिनकर रथ भीड़

मानुष भए कत पौरुष करत
अलप बयस घड़िएकमे मरत

इन्द्र जखन मेघ देलन्हि पठाए
सुनल गोबर्द्धन लेलक उठाए

महिसिक दधि दुध घृत खिरि खाए
बढ़नुक दिन दिन बढ़ले जाए

रथ चढ़ि तुरतहि करिअ पआन
से मोर मित्र जे सत्रहि आन

उठल सभा सभ थोर बत भेल
भेल अटकाओ अबेरिक लेल

ओहिदिन दानपति ओतहि रहल
मानि लेल सभ कंसक कहल

ओहन काज करबा तेँ लागू
भक्ति हेतु किछु जानथि आगू

कए अंगीकार चलल अकरूर
दरसन हेतु हरख भेल पूर

धन्य धन्य हम धन मोर भाग
धन रसना मोर धन अनुराग
बेद उधार जनिक अबतार
काज तनिक हरु धरनिक भार
खम्भ फारि जनि हरि अबतरल
दरसन लागि अटकि मन रहल
बलि जनि छलल रूप धए खरब
तनिका सोँ हम कहिनी करब
जनि ढाहल अछि राबन गर्व
जनि छत्री कुल हरलन्हि सर्ब
भन मनबोध अकरूरक हर्ख
बरनिअ तोँ बित बारह बर्ख



सप्तम अध्याय

एक दिन गोकुल पुर हौआ
हय रुप धए पहुँचल मुहबौआ
झट झट ओठ जीह लए चाट
खट खट खुर लए मेदनी काट
धएलक तरह जेहन गोट थीक
गोटएक गोप कएलक टंगझीक
जपबह रुद्र भखब हम सूद्र
घोड़ कुदए ने बाखर कूद
जत छल गोप सबहु एह भाख
त्राहि कृष्ण सरनागत राख
दरबरि दौड़ि कृष्ण भेल आगू
केसी दर्प देखाबए लागू
मुँहगोट बाबि देखओलक आँत
उजर कोदारि सघन बड़ दाँत
दौड़ल दिनकर देखि जनि राहु
हरि कएल आगु अपन एक बाहु
से गिड़ि दरबरि भूमि लोटाएल
कृष्णक महिमा बाहु मोटाएल

माझहि माझ असुर गेल फाटि
सए धुर धरनि लधुर गेल पाटि
लोचन स्रबन एकक दुइ चरन
भेल दुइ आध सुकबि से बरन
मुइल असुरगोट छुइला गेल
तखन कृष्ण गंगाजल लेल
मेघक पिठि नारद असवार
लागल कहय विनय अनुसार
एहि असुरक डर इन्द्र डेराथि
पचइन्हि नहि डर जे किछु खाथि
तेहन असुरगोट हँसितहिँ हनल
देबक काज सकल अब बनल
मोहि भेल बड़ सुख पुनु सुख पाओब
कंस जुद्ध हम परसू आओब
ई कहि नारद मुनि गुन गओल
कएल अकरूर चलएकेर डओल
मथुरहि नहि खएलन्हि अकरूर
ब्रज पहुँचलअनि डुबइत सूर
दुर सोँ देखलन्हि नन्द दोआर
बैसल देखल बणम गोआर
ताहि बिच देखल आनन्दकन्द
जनि उडुगन बिच पूरन चन्द

कनक मुकुट तेहि जगमग जोती
पीअर बसन दसन गजमोती
नब जलधर अपराजित फूल
अतिसी कुसुम गात समतूल
मुकुटक निकट मयूरक पाँखि
सरदक नलिन मलिन करु आँखि
मकराकृत कुण्डल दुहु कान
से छबि कबि कह गुनक निधान
हार हृदय वैजन्तिक नीक
ओहन दोसर ककरहु नहि थीक
सहस बदन हो त ओ रुप कहिअ
देखइत मन होअ देखितहि रहिअ
देखि अकरूर दूर सौं धाए
पाए पड़लअनि प्रेम जनाए
भरि अङ्कम धरि लेल दुहु हाथ
हँसि हँसि कुसल पुछथि ब्रजनाथ
उठि हलधर भरि अङ्कम धएल
अपन भगत बुझि आदर कएल
कुसल छेम अबसेख न रहल
तखन कंस कृत अविनय कहल
कंसक बध लए सारंगपानि
ई कहि बेओँत नेओँत लेल मानि

कहलन्हि कंस हमर छथि वध्य
से आब हएत तीन दिन मध्य
गोविन्द गमन सुनल ब्रजनारी
जे छलि जतहि बैसलि हिआ हारी
फूजल केस माथ नहि झाँप
लागलि सभ मिलि करए विलाप
कोपहुँ कटु नहि भाखथि कबहुँ
सहथि कहिअ जत हमरा सबहुँ
तनि हरिकएँ अब हरि लय चलल
हृदय दुसाध बुसा लए मलल
एहन करूर दोसर नहि फूर
कोन धएल नाम एकर अकरूर
ओतए सुनिअ एक रमनि अनूप
जकर पाएर सन मोर मुँह रूप
हमरि तोहरि सन अछि कए गोटी
आब हरि फिरथि तकर कोन कोटी
केओ करुना करि अभरन तेज
केओ कर सजल नलिनदल सेज
अपनं गाँथल कुसुमक माल
सुनि हरिगमन भरम होअ ब्याल
केओ हिअ हारि बैसलि भए सञ्च
केओ कर रहथि तकर परिपञ्च

केओ भेलि जोइसिक आँगन ठाढ़ी
कहिअ त सभ अभरन दिअ काढ़ी
हम भरिजन्म सुदिनि भए रहब
पुछए आबथिं तँ भदबा कहब
केओ कह नन्दमहर नहि मान
गोबर-गणेश गोट किछु नहि जान
गोकुलाक बुढ़कें ग्यानक न लेस
ईस धएल अछि मानुस भेस
एपरि राति सगर गेल बीती
होइत प्रात भेल चलनक रीती
बाइस सए फरमाइस भार
दधि घृत लए कहुँ चलल गोआर
नन्दमहर जेठरैअति ताही
एको दहि नहि लेथि अधलाही
पूर्बक प्रेम कृष्ण देल छाड़ी
कहलन्हि नहि किछु समदाबाड़ी
ओतहि रहब कि आएब फेरी
कहलन्हि नहि किछु चलएक बेरी
जाबत छथि देखिअ भरि दीठि
थिक पछुआड़ आँखि काँ पीठि
ई कहि गोड़हा चढ़ि भेलि ठाढ़ि
ता कृष्ण गेला कोसहु सों बाढ़ि

एकहक गोड़हा चारि चारि चढ़ली
की रह संच कि बिरहक भरली
सब गोड़हा गोबर भए गेल
ओरक फिरि गेल नोकर लेल
केओ केओ गामक बाहर गेली
आउरि 413 रि बाउरि सनि भेली
हय अतिजबन पबन भए गेल
रथ नहि सुझ पथरेनुक लेल
तखन सबहु मन ई प्रतिभसल
करसोँ ससरि परसमनि खसल
मधुपुर रमनि जखन हरि देखती
जीबनजन्म सुफलकए लेखती
ई कहि झाँखथि सुमरथि गून
हरि बिनु नगर सगर भेल सून
भन मनबोध दिवस छल जेहन
से पुनु होअओ सत्रुकाँ तेहन



अष्टम अध्याय

जमुना तीर रथ अटकल जाए
उतरि दानपति गेला नहाए
डुबिकहुँ जल हरि हलधर देखल
सेस सहित अजगुत कए लेखल
कहएक मन किछु कएलन्हि जखन
से बुझि बचन कहल हरि जखन
जमुनहुँ जल देखलन्हि हरि राम
उपर होथि तँ ठामहि ठाम
इस्तुति तखन दानपति कएल
से कहलन्हि हरिबंसहि फोएल
परम तुरित जमुना भेल पार
रचल दानपति अचल बिचार
किछु दुरि धरि प्रभु पाएरहि चलल
रथ अकरूर आगुकेँ धएल
हरखित भए चलला दुहु भाए
धोबिघट देखलन्हि किछु दुरि जाए
आरे आरे रजक तोँहे राजाक पिआर
बसन दान किछु करह इआर

ई सुनि धोबिआ उठल टिडुआए

धोबिनि कहल उक दिओन्हि लगाए

ई सुनि कृष्ण बाज जकाँ छूटि

मारल धोबि धोबिघट लेल लूटि

कनइत धोबिनि तेजल घाट

सिन्दुर मेटओलन्हि बाटहिबाट

पीतपिताम्बर हरि बिछि लेल

स्याम बसन हलधर काँ देल

धोबिघट लुटल देबलोक हँसल

से उपलछन ओतहि प्रतिभसल

हरिकाँ कुसुमक अधिक सिनेह

देखलन्हि मालाकारक गेह

ततए जाए पुनु मंगलन्हि माल

धन ओहि मालिक छल ओ काल

गुनमन्त मलिआ पुन्यक भरल

दिब्य द्रिस्टि भए कहु व्यवहारल

देखि फुल देअए परिचय नहि पूछए

सन्तति ओकर आजधरि अछए

पहिरि माल बर देलन्हि राम

कएल प्रबेस नरेसक गाम

लए अनुलेपन कुबुजा ठाढ़ी

देखि हरि देह नेह गेल बाढ़ी

कहल तुरित चलु हमरो गेह
जन्म कृतारथ कए मोर दएह
गेलाह लजाए संग जेठ भाए
कहलन्हि किछु पुनु युक्ति बुझाए
फुट भए कहलन्हि चानन दएह
घुरइत आओब तोहरो गेह
भाव भरलि किछु कहए न पार
चानन दए पुनु चित्त बिचार
हम अतिदुबरि कुबरि अधलाही
तए नहि प्रभु मोहि अनु अबगाही
से सुनि कृष्ण सोझ कए देल
कुबुजा छुटि अब्जा भए गेल
दुइ बेकतिक हरि माफी कएल
कंसक हंस कटोरहि धएल
चानन चरचित सकल सरीर
देखइत नगर फिरथि जदुबीर
ई मन कएलन्हि करिअ कुफार
देखलन्हि कंसक सस्त्रागार
रच्छक पुछलन्हि कए अनुराग
से धनु कतए जकर होअ जाग
पुछितहिँ बल कौसल कए जाए
अजग्य धनुखकर लेलन्हि उठाए

अति अकलेस देल गुन जोरी

विसकिसलय जकँ दए हलु तोरी

तकर सबद मधुपुर परिपुरल

से सुनि ककरहु किछु नहि फुरल

अटकल नहि छिटकल दुहु भाए

रच्छक कहल कंससँ जाए

अकरुर अएलाह से आब बुझल

धनुख भंग देखि झक झक सुझल

गोकुलसँ जत आएल गोआर

तत अटकल अकरुरक दुआर

हरि पहुनाइ कहए के पार

छओ रस भोजन छतिस प्रकार

अकरुर-रमनि से हरख सराहिअ

बड़ घोघट किछु तकलो चाहिअ

हरि आगमनक निरनए पाए

चानुर मुस्टिकेँ लेलन्हि बजाए

कहलन्हि कंस हमर तोँह माल

अजुकहि दिन लए कएल प्रतिपाल

करब सहोदर सम परिपाटी

प्रातहिँ आधा राज देब बाँटी

हरि हलधर वसुदेवक तनय

से मोर हित जे तुरतहिँ हनय

से सुनि माल बहुत मनुसाएल

जगत्र विदित छल सरोँ खेलाएल

कहलक सांझ हमर जौं आओत
जिबइत जाए एकओ नहि पाओत
कंस तखन हथिबाह बजाओल
आदि अन्त बिरतान्त सुनाओल
कहलन्हि कुबलयपीड़ लए आनी
द्वार धरब अति भिनसर जानी
जानिअ जेहन तेहन बेबहरब
आबए ने पाब तेहन पुनु करब
होइत प्रात भेल नग्र हकार
असम जद्धि बरनए के पार
भन मनबोध हिदए जे सूझ
रंगभूमि किछु बरनय बूझ
□

नवम अध्याय

भरि जोजन लए बनल अखाढ़
देखि सरीँ मन बुढ़हुक बाड़
हमहुँ खेला कए कुस्ती करिअ
होइछ बिलम्ब नुआ अब धरिअ
लेजिम लाक ठमालम धएल
निक कोठिक माटि ढेरी कएल
कए ठाम अरिगह करिगह खनल
गुदगर काठक मुदगर बनल
रंगभूमि भेल अति परचण्ड
चौदिस मण्डप खण्ड पखण्ड
सए दुइ तिनि कए महला माँच
सभ बाजन गनिकागन नाच
आगर कुलसिल जनिका जेहन
माँच बनाओल तनिका तेहन
रंगभूमि सभ देखए गेल
हेठ ठाम नहि लोकक लेल
अपन माँच भेल जोजन ठाढ़
चढ़ब सिढ़ी बिनु से बड़ गाढ़

कथिलए कंस बान्धल उँच माँच
कालक धएल कतहु केओ बाँच
जाबत होअ सभ लोक बटोर
आएल आएल भए गेल सोर
कनक मुकुट झलकलअन्हि द्वार
नन्द आदि सभ संग गोआर
हलल महाउति हाथी हूलि
घड़िएक कृष्ण खेलएला खूलि
गहि गजदन्त उपाड़ल हाथ
से लए हस्ति हनल ब्रजनाथ
कुबलयपीड़ भीर जकाँ पड़ल
से देखि कंसक बफु बड़ झड़ल
करिबरदन्त बरायुध हाथ
आगु चलल हरि हलधर साथ
मारि महाउति जाए अखाढ़
कए बलदाप दुहूजन ठाढ़
पुरबधु संग देवकी भेलि ठाढ़ि
नयन बहए जलधर तह बाढ़ि
सुतमुख देखि पयोधर भरल
अटल घटल नहि पुनु दुध ढरल
पुरनागरि देखि सारंगपानी
मानल बिधि मोहि निधि देल आनी

नयन निरखि नब नेह जनाब
मन मन कंसक मरन मनाब
जिबइत रह तँ सब सुख खोअ
मर मुड़हा तँ सभ भल होअ
अकरूरक संग ठाढ़ वसुदेव
अन्तहु तनय बदन देखि लेब
आगु दबाए जाए नर चारि
कहलन्हि कृष्ण सभा परचारि
चानुर अति बल हम अति नरम
हुनि हम पछड़ा अनुचित परम
सुनल सभा जन मानल लाज
कंसक डर केओ किछु नहि बाज
तखन कहल पुनु सारंगपानी
हृदय बिचारि बचन अनुमानी
आज छुटत अन्याइक परिक
हमहु एहन नहि खसला घरक
समय जानि सहि होअ न ताब
के अबइछ से आबओ आब
मारल ताल उठल घहराए
ककरहु टंगरि नहि ठहराए
आबहु जे अछि अधिक खेलाएल
करौ पिसान से कहितहि आएल

मोट मोट बाँहि लगओलक माटी
कुम्भकरनसँ छल नहि घाटी
कए बलदाप रोपल दुहु हाथ
आबि पछारह कह ब्रजनाथ
थिक बलमन्त जाति बड़ दुष्टि
घड़ि एक कएलक मुष्टामुष्टि
एक पायर सोझ पाछाँ कए लेल
वाम ठेहुन मोड़ि आगु कए देल
माथ भिराए हाथ देल कान्ह
कए बेरि खाली गरदनि बान्ह
बाँहि बली जनि हाथी गोत
कोन तोँहि दाओ सिखाओल ओत
ओघरं दाओ कृष्ण कए देल आड़
होअए असक पुनु बक दए छाड़
कृष्ण धरथि त ओहो जोगाव
से देखि सजनक हृदय सोगाब
एहि बिधि पछड़ा भेल बड़ि काल
खन होअ भाउरि खन होअ ताल
कृष्ण रंगि लपटन देल छाड़ी
हनलन्हि पुनु झटपटहि पछाड़ी
सोनित चलल बहुत मुह नाक
बिगहा भरि भुमि भए गेल पाँक

चानुर माल हनल भए मुइल
की जिव जाहि कोपि हरि छुइल
जे विधि चानुर हरिकाँ बनल
से विधि मुष्टिक हलधर हनल
से देखि राखल तोखल माल
कए बल दाप उठल दए ताल
तोखल मारि कंस लग जाए
पच्छिक रूप हरि गेल उड़िआए
माँचहि उपरसँ देलन्हि पछाड़ी
हेठ खसाओल हलल न छाड़ी
हृदय ओकर सुमिरि कृष्ण खिसिआए
गहि कच किछु दुरि लेल घिसिआए
विश्वम्भर रतिएक भरि देल
कंसक प्रान फाँहि दए गेल
से देखि दौड़ल कंसक भाए
नाम सुदामा दर्प देखाए
बिचहि झपटि कए हलधर धएल
हँसितहिँ हुनकहु ओह गति कएल
मुइल पाँच जन बाँचल आन
रंगभूमि भेल अति समसान
कंसक बहु भाबहु सब आइलि
कत करुना कए धरनि लोटाइलि

कारुन रोदन सबहुक सुनल
कृष्णक आँखि नोर दुहु भरल
बोल भरोस बहुत हरि देल
चललाह संग अपरतिभ भेल
ई नहि छल जे बाँचत प्रान
कंसक हाथ हमर हएत त्रान
कखन की होअ जानि नहि जाए
ताबत तात चलू अगुताए
जाबत हम पहुँची नहि आए
देखब दूबरि होअए नहि गाए
ई कहि नन्द बिदा हरि कएल
कोटि रतन देल कंसक धएल
किछु दुरि आगु जाए हरि राम
तात-ज़ननि-पद कएल प्रनाम
कहलन्हि कृष्ण छेमिअ अपराध
एत दिन सेवा जे भेल बाध
सेवा बड़ वसुदेवक पुरल
ओहन ब्रह्मगोट पाएर परल
कृष्णचरित्र सभ सुमिरनं कएल
देबकी सहित पाएर परि गेल
बुझि वसुदेव बहुत गुन गाओल
तखन कृष्ण पुनु मोहनि लगाओल

सभक यथोचित कएल प्रनाम
जत छल यदुबंशी ओहि ठाम
उग्रसेन काँ तखन बजाए
बेड़ि कटओलन्हि विनय जनाए
कहलन्हि कृष्ण लोक हो सुचित
एह नृपति एहि ठामक उचित
जदुकुल जैअओ जजातिक साप
तकर करिअ जनु मन अनुताप
हम हलधर अनुचर छिअ जकर
चौदह भुवन हुकुम चल तकर
राज सिंघासन चओर ढराओल
उग्रसेन सिर छत्र धराओल
दीनक बन्धु अनाथक नाथ
सुखदायक एक श्रीब्रजनाथ
कृष्ण कुतूहल एकर नाम
संकट दूरि करथु श्रीराम
भन 'मनबोध' कंसबध कहल
ओहि दिनसँ उपद्रब गयल



दशम अध्याय

अस्ति परापति कंसक नारि
जरासिन्धु काँ दुइ कुमारि
बैधब भाव बहुत बेकताए
तान भवन दुहु पहुँचलि धाए
कए करुणा कत लागलि कहए
जे सुन ताहि धैरज ने रहए
सिन्दुर हरल मोर नन्दक पूत
जे ने होमए बुझ ककरहु बूत
ससि खसि पड़थि समुद्र सुखाथि
मेरु ठाम तजि अनतय जाथि
ई बरु होअ होमए बरु पार
लठिधर ग्वार महारथि मार
पानि पान हम करब न ताब
स्वामि बैर हम लेब न जाब
जरासिन्धु नृप धैरज देल
कटज बटोरक अटकर भेल
सोरठ भोरठ ओ गढ़पाल
अंग बंग तेलंग नेपाल

बेतिआ तिरहुति अओर जत देस
नृपति हकारल सकल नरेस
अटकल कटक कोट छल जतहु
मगह जगह नहि रहबे कतहु
फौज मोटाएल दिन दस बीस
सभ बहराएल मथुरा दीस
रज उड़ि दिनकर दरसन छुटल
कमठक पीठि भारसोँ फुटल
इन्धन बिन्धन महि नहि अन्न
जल भेल जलनिधि सरनापन्न
साँझ समय लसकर उठ गरद
से सुनि होअए नृपति सिर दरद
बेँत हाथ बुढ़ बुढ़ चोपदार
चहुँ दिसि चुप चुप करए पुकार
अटकल कटक कोटि जन घेरी
झपटि झाँपि जनि बाज बगेरी
हरि सोँ द्वारमान कएल अरज
नगरक निकट नगेरा गरज
लसकर मान कए के पार
उमड़ि आएल जनि सगर संसार

हरि संग्रामहु जे छल लड़ल
सभ जादव मुँह फुफरी पड़ल

एक पए हरखित श्रीब्रजराज
भूमिक भार उतारब आज

हरि हिए हरखि हृदय अनुमानी
दृढ़ जय होएत सभए हलुजानी

अपन अपन लए लए हथिआर
आएल जादब सभ भए तैयार

उग्रसेन उद्धब अकरूर
जगत विदित थिक बाणासूर

अति अकरूर सत्य बड़ बीर
अरजुन सम रन राजित धीर

जुधिक बचन करए सभ लागु
सहित सरीर बीर रस जागु

दारुक बड़ रथ लएलह साज
अपनहि अपन दुन्दुभी बाज

सुभ रथ संग हरि बाहर भेल
बिप्र बर्ग सभ आसिख देल

हल हलधर काँ सोभन्हि कान्ह
रंगभूमि एहनो नहि आन

मदगन सोँ कदगन भए लागी
भेल जुद्धि समता बल जागी

जोड़हि जोड़ लागि गेल जूधी
जे ने होअए किछु धरम बिरूधी

जरासिन्धु हलधर सोँ लागू
दोसर आन होएत के आगू

एहि रन भीम न केअओ सुबुधी
लागल होअए गदागदि युधी

नृपति गदा लेल गदा छिनाए
लेलन्हि हलायुध मुसल उठाए

होइत अमोघ मोघ बड़ जानी
होमए लागल अकासक बानी

र्छा ठमिअ हलधर अब आई
हुनकहु मारक रचल उपाई

सुनि महिपति मन विस्मय भेल
मंगल बचन कृष्ण काँ भेल

रन तजि रनपति चलल पराए
देल मुसलायुध मुसल नराए

जे छल रंग सेहओ भेल भंग
घसकल अंग बंग तैलंग

ओहि दिन हरि पुनु लड़ल असीम
सए अरजुन जनि दुइ सए भीम

हरिसोँ आँखि मुनि भरि मन लड़ल
आगि उछलि जनि फनिगा पड़ल

भूमिक भार उतारल आई
हरि जत हनल तत गनलो ने जाई

कतो एक रनपति घर दिस भेल
बाँचल रहल से मारल गेल

बिचलल केअओ नहि पाए हरि थेघ
जादबगन भेल भादव मेघ

लागल करए बान जनि वृष्टी
अरि मन होए लोप भेल सृष्टी

जादबगन सोँ जे नृप लागू
से नृप धरम दोआरा माँगू

फिरि गेल फौज सेख जे रहल
लिधुर बिधुर सरिता से बहल

भासल ढाल काछु सन लाग
साप भरम जनि भासल पाग

तएँ हरि छोड़लन्हि होअ उपकार
फेरि बटोरताह भूमिक भार

जल मन मोट छोट भए गेल
कोट गेलाह नहि लाजक लेल

अबनि काल निक बिर बटुराए
फेरि निरलज सजि पहुँचल आए
रीछ बालक जकाँ सभ भरि धाए
जतहि संचार ततहि चल आए
लागल जुधि फेरि भेल भंग
ने रहथि अंग बंग तैलंग
चढ़ि कहुँ आबथि हारथि फेरी
ऐँ परि जुधि भेल पन्द्रह बेरी
भन 'मनबोध' मगहपति फिरल
गन भय अएलाह गेला हरि रहल



परिशिष्ट-१

मनबोधक किछु स्फुट गीत

(१)

हे हर सभ विधि मोर अपराधे ।
परनागरि परधन हम चिन्तल कएल कथू नहि बाधे ॥
यौवन मदन मतल हम छलहु ने गुनल दहिन बामे ।
निज कर हरखि गरल हम पीउल परिवेदन परिणामे ॥
विषय विषयरस वस भय रहलहु बएस सगर बिति गेल ।
संकट हरण चरण सरसीरुह मधुकर भय नहि भेल ॥
यम सम किङ्कर परम भयंकर बिखम देखब कोन भाती ।
जम सासन देखि जिउ मोर कापय निज कर धरु मोर साथे ॥
शयनहु हम शिवशिव नहि भजलहु ने भजलहु भगमाने ।
केशरि बीज उशर छिड़िआओल धिक धिक (थिक) हमर गेआने ॥
दुहु कर जोड़ि मिनति अभिनत भय कवि मनबोध एह गावे ।
हम अपराधि मानि शरनागत तोहि जेहेन मोन भावे ॥

हेरि हेरि पथ वनमाली नयना आन्हर भेल ।
सपनहु कबहु न पाबिअ जब से कान्हरा गेल ।।
गिरि गहि गिरिधर राखल एत दिन इ छल नेह ।
शिव शिव विरह धार बिच आइ परल से देह ।।
ये पटभूषण परिहिअ हरि हिअ असम सोहाब ।
से पटभूषण दूषण देखइत लगइछ आब ।।
क्रूर करम अकरुरक विधि विपरित जनि भेल ।
देखितहि चान चकोरहि जनि घन आतर देल ।।
नयन कोर जल परल पुनि पुनि झापहि दीन ।
मदन दहने अलि पलहु जिअ तलफत जनि मीन ।।
भन 'मनबोध' कहब कत एत दिन अति सुख देल ।
धैरज धरहु भवन बसि अब हरि कुबुजिक भेल ।।

(डा० श्री रामदेव झाक संकलनसँ गीतद्वय)

(३)

अवधि बीतित भेल मन अवगाहि ।
हारि बैसलि अब कि कहत काहि ॥
दिन दिन तनु छिन अनुखन मोह ।
जिउति लखन अवधरि बिछोह ॥
वचन विकल नयन ढर नोर ।
फुजल चिकुर लट नहि चेत चोर ॥
बिसरि बैसल नहु मन अनुमानि ।
दसनि दसन निकसल कानि ॥
रहिअ विदेस, सहिअ दुख भेष ।
एहनि रमनि घर छेंकिनि बेष ॥
दए बिसवास रखू मन राख ।
प्रान पाहुन सन राखब भाख ॥
मन गुनि 'मनबोध' कवि इहो गाव ।
नृपति नरेन्द्रसिंह बुझु भाव ॥

("गीतरत्नावली" से)

कृष्णजन्मक विषय-वस्तु ओ महत्त्व

'कृष्णजन्म'क विषय बड़ प्रसिद्ध अछि । जखन पृथ्वी दैत्यसबहिक उत्पातेँ व्याकुल भेलीहि तखन भगवान विष्णु वसुदेवक बालक भए जन्म लेलन्हि । नारद ई कथा कंसकएँ जाए कहि देलथिन । तखन कंस वसुदेव तथा देवकीकएँ कारागारमे बन्द कए देलकन्हि । हुनक पहिल सात सन्तानकेँ मारि देलकन्हि । तखन कृष्णक जन्म भेल । जन्म होइतहि वसुदेव [illegible] कृष्णकएँ नन्दक ओतए लए गेलथिन्ह । नारद कंसकएँ आबि पुनि सबटा कथा कहि देलथिन्हि । ओम्हर नन्द-यशोदा कृष्णजन्मोत्सव मनओलन्हि । कृष्ण भगवान् अपन नानाविधि लीलासब नेनहिसँ देखाबए लगलाह-पूतनाकेँ मारल, शकट-भङ्ग कएल, अर्जुनक दुनू गाछकएँ उपाड़ल । क्रमशः ओ सात वर्षक भेलाह । नन्द हिनका हाथमे चरबाहि सोपल । गाए चराबए जे जाथि ताहि प्रसंग कतोक लीला कएलन्हि-कालियदमन, प्रलम्बक-संहार, गोबर्द्धनलीला । ई सब देखि कृष्णक देवत्व सब बुझए लगलन्हि । नारद फेरि कंसक ओतए गेलाह- कहलथिन्ह जे ई कृष्ण अवश्य देव अंश थिकाह। अक्रूर (कंसक भाए जे विभीषणवत् नीक स्वभावक छलाह) कंसक आज्ञासँ जाए कृष्णकएँ कंसक बध करबाक हेतु प्रार्थना कएलथिन्ह। कृष्ण तखन कंसक ओतए गेलाह । कंस मल्लयुद्धक आयोजन करओने छल। ताही बीच कुवलयपीड नामक हाथी हिनकापर हुलकओलकन्हि । ओकरा मारैत ई सब अखाढ़ापर पहुँचलाह । जकरासँ मल्लयुद्ध भेलन्हि से तँ मारले गेल, कंसहुकएँ कृष्ण मचानपरसँ खसाए पटकि मारल । कंसक बध भेने उपद्रवसब शान्त भेल । एही हेतु भगवानक जन्म भेल छल, ततबे नहि पछाति कंसक परिवार ओ मित्रवर्गहुक संहार कृष्ण कएलन्हि । एतबे कृष्णजन्मक मुख्य कथा थिक-भगवानक अवतार (कृष्णजन्म) सार्थक भेल ।

एकरा बादसँ अध्यायसबमे भीम ओ जरासन्धक विशेषरूपेँ युद्धक वर्णन अछि । ओ सब मारल गेल तथा वसुदेव राजा बनाओल गेलाह । हिनक उद्धार कृष्णक भक्तिअहिसँ भेल, इत्यादि कथा एहि भागमे अछि । दशम अध्याय

धरि ई कथा श्रीमद्‌भागवतक दशम स्कन्धक पूर्वार्धक आधारपर लिखल गेल अछि। एगारहम अध्यायसँ अन्त धरि हरिवंश, विष्णुपर्वक आधारपर लिखल गेल अछि।

'कृष्णजन्म'क भाषा साधारण: अत्यन्त शुद्ध अछि। वाक्य ओ शब्दक विन्यास रोचक ओ कटगर अछि तथा अनुपम धारावाहिकता एकर वैशिष्ट्य थिक। अनायासेँ एकर पंक्ति सब जनताक भाषामे समावेश कएल गेल अछि। प्रसादगुणेँ ई ग्रन्थ यत्र तत्र भरल अछि। अलंकारक उपयोग एहिमे कम अछि परञ्च जतए अछि से नितान्त उपयुक्त ओ विषयकेँ स्पष्ट एवं मधुर बनबैछ।

दशम अध्यायसँ–विशेष कए चौदहम अध्यायसँ-प्रस्तुत ग्रन्थक भाषा ब्रजभाषा–हिन्दीसँ प्रभावित भए गेल अछि। अस्वाभाविकरूपेँ कृष्णक भक्तिक चर्चा कएल गेल लगैछ। बुझि पड़ैछ जेना एहि अध्याय सबहिक लेखक मनबोध नहि छलाह। भाषा ओ शैलीमे पहिलुका अध्यायसबसँ अन्तर छैक। साधारणतया दशमहि अध्याय धरि 'कृष्णजन्म'क हस्तलिखित प्रति भेटैत अछि। ततबे धरि ''इति श्रीभागवते महापुराणे'' सेहो लिखल अछि। एतबेमे कृष्ण भगवानक मुख्य चरित्र-चित्रण भए जाइत अछि। ''भूमिक भार उतरल आइ। हरि जत हनल तत गनलो ने जाइ''। भए सकैत अछि जे केओ अन्य कवि मनबोधक नामे कृष्णक अवशिष्ट चरितकएँ पूर्ण कएने होथि तथा मनबोधक अपन लिखल ई अध्यायसब लुप्त भए गेल हो वा प्रचलित नहि भेल हो।

सबसँ विशेष महत्वक चमत्कार 'कृष्णजन्म'मे ई अछि जे मैथिल संस्कृतिक छाप कृष्णक कथहु मध्य देखि पड़ैछ। तत्कालीन मैथिल समाजमे आधुनिक जकाँ बालकक जन्म भेलापर गाम भरि हँकार होइत छल, तेल-सिन्दूर बाँटल जाइत छल, सोहर गाओल जाइत छल, घर आङनमे उत्सव होइत छल। धिआ-पुताक अलौकिक वा अस्वाभाविक कष्टकएँ दूर करबाक हेतु 'चुमाएब' पूर्वहु लोकमे प्रचलित व्यवहार छल। शुभ अवसरपर गीत-नाद होइत छल। चरबाह सब झटहा ओ चेप गाछपर आइए-काल्हि जकाँ फेकैत छल। एक गोट 'टेलबा टेलइ' खेल ताहि दिन प्रचलित छल जे सम्प्रति कोनरूपमे अछि कहब कठिन। कार्यकरक हेतु जएबासएँ पूर्व मालिक केँ 'सलाम' करबाक प्रथा छल। नेनाकएँ ''मुहबौआ'' प्रभृतिसँ डेराओल जाइत छल। मृतकक

स्पर्श भेने आइए-काल्हि जकाँ गंगाजल लेबाक प्रथा छल। भदबाक विचार ओहू दिनमे मिथिलामे खूब छल, तएँ जखन कृष्ण मथुरा जएबाक विचार कएलन्हि तँ केओ केओ गोपी ज्योतिषीक आङन जाए कहलथिन्ह जे जँ कृष्ण "पुछए आवथि तोँ भदबा कहब"। "फरमाइसी" भारक प्राय: तखनहुँ बेस ओरिआओन होइत छल। गोरहापर चढ़ि लोककएँ देखबाक चेष्टा मिथिलाक ग्राम्य-जीवनक अत्यन्त स्वाभाविक चित्र थिक-**"एकहक गोरहा चारि चारि चढ़ली। की रह संच की बिरहक भरली।"** सरोंक नानाविधि तैआरी, कोठिक माटिक ढेरी करब, अरिगह करिगह खनब, गुदगर काठक मुदगर बनाएब, ओकरा खेलएबाक विविध ढङ-सभ मिथिलेक चित्र थिक। सबसँ बाढ़ि 'तिरहुति' मिथिला ओ बेतिआ (चम्पारण) कएँ पृथक् करबाक स्पष्ट वृत्तान्त पहिले पहिल मनबोधहिमे भेटैत अछि। सब प्रकारेँ देखि पड़त जे महाकाव्यक अनुरूप एहि ग्रन्थमे छोटसँ छोट बातमे मैथिलत्वक ओ मिथिलाक जीवन ओ संस्कृतिक प्रभाव छैक। प्रतीकरूपमे पुराणसँ कथा लए मिथिलाक संस्कृतिक साँचामे ढारि ओकरा विस्तारकए रोचक ओ स्वाभाविक बनएबामे कवि सिद्धहस्त छलाह।....

(म० म० डा० उमेश मिश्रक भूमिकाक किछु अंश)



कविवर मनबोध ओ हुनक कृष्णजन्म

मनबोधक कृष्णजन्म मैथिली साहित्यक एक गोट अनुपम रत्न अछि ओ मिथिलाभाषाक इतिहासमे एकर बड़ विशिष्ट ओ महत्वपूर्ण स्थान छैक । मैथिली साहित्यक ई प्रथम ग्रन्थ थीक जे प्रकाशित भेल ओ से सम्पादन कएलैन्हि मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ताक प्रख्यापक विश्वविदित भाषातत्त्वविद्, महामना ग्रिअर्सन साहेब । ओ संस्करण बंगालक एसिआटिक सोसाइटीक जर्नलमे सन् 1882 इ० मे छपल अछि । तदुपरान्त एकर एक गोट संस्करण दड़िभंगाक यूनियन प्रेससँ सेहो प्रकाशित भेल जकर सम्पादन लालगंजक श्रोत्रिय पंडित धरेश्वर झा कएलैन्हि । एम्हर आबि लहेरिआसरायक विद्यापति प्रेससँ महामहोपाध्याय डॉ० उमेश मिश्रक सम्पादकत्वमे अनेको उपादेय विषयसँ पूर्ण भूमिकासँ संवलित संस्करण प्रकाशित भेल । प्रस्तुत सुलभ संस्करण 'मैथिलीमन्दिर', दरभंगासँ प्रकाशित भेल अछि ।

एहि ग्रन्थक नाम ओ विस्तार दूहू विवादास्पद अछि । महामना ग्रिअर्सन एकर नाम ''हरिवंश'' कहने छथि ओ आन सब संस्करणमे एकर नाम ''कृष्णजन्म'' अछि । विस्तारहुक विषयमे केवल श्री महामहोपाध्याय जिउक संस्करणमे अठारह गोट अध्याय अछि; शेष दूहू संस्करणमे केवल दश अध्याय अछि । काव्यक विषयक आलोचना कएलासँ स्पष्ट होएत जे एहिमे भगवान कृष्णक लीलाक वर्णन अछि । केवल कृष्णक जन्महिक कथा एहिमे नहि अछि । समस्त कृष्णाबतारहुक वर्णन अठारहहु अध्यायमे समाप्त नहि भेल अछि प्रत्युत दश अध्याय धरि जे कथाक क्रम अछि से क्रम तकर उपरान्त नहि अछि । एगारहम अध्यायसँ भाषा सेहो गड़बड़ लगैत अछि ओ कतेक ठाम हिन्दीक पद सब सेहो अछि । अतएव हमरा दश अध्याय पश्चातक अंशमे प्रामाण्य ग्रह सन्दिग्ध अछि ओ हमरा दृष्टिएँ कविक ई ग्रन्थ सम्पूर्ण नहि भेलैन्हि । हुनका अभिप्रेत छलैन्हि ''कृष्णावतार''क लीलाक वर्णन ओ दश अध्याय धरि कृष्णक बाल लीला समाप्त भए जाइत छैन्हि । तकर पश्चात् जँ कविक रचना थीको तँ विशुद्ध पाठ नहि भेटैत अछि ओ अठारहो अध्यायमे

ताहि दृष्टिसँ ग्रन्थ अपूर्ण बूझि पड़ैत अछि । वस्तुतः जे चमत्कार आदितः दश अध्यायमे छैक से तकर पश्चात् नहि अछि ओ तेँ हमर धारणा इएह अछि जे एहि ग्रन्थक विशुद्ध पाठ दशे अध्यायक उपलब्ध होइत अछि ।

तहिना एहि ग्रन्थक रचयिताक प्रसंग सेहो कोनो निश्चय नहि होइत अछि । ग्रिअर्सन साहेब एहि ग्रन्थकेँ भोलनापरपर्यायक मनबोध झाक रचित कहैत छथि जे बढ़िआमवासी पवौली मूलक चानझाक बालक छलाह तथा जनिका नामपर पुबारिपारमे बड़ प्रतिष्ठित पाँजि अछि । भोलन झाकेँ पंजीमे "भाषाकवि" कहल भेटैत अछि । श्री महामहोपाध्याय मिश्रक हिसाबेँ ई रचना थीक "पलिबाड़ जमदौली" मूलक ज्योतिषी सोनमनि झाक बालक ज्योतिर्बिद् मनबोध झाक । हमरा तँ एक जन आओर मनबोध झा ज्योतिर्विद् भेटैत छथि "नैरोनए-मलिछाम" मूलमे जे जटेश झाक बालक छलाह । यूनिअन प्रेसक संस्करणमे ई काव्य "भोलन झा"-रचित कहल गेल अछि, भोलन झाक अपर नाम मनबोध छलैन्हि से पंजीमे नहि भेटैत अछि । श्री महामहोपाध्याय जिउ सेहो कहैत छथि जे भोलनापरपर्यायक मनबोध कृष्णजन्मकर्त्ता थिकाह सेहो मत अछि । अतएव यावत पर्यन्त एकर विरुद्ध प्रमाण नहि भेटल अछि ई मानि लेब उचित बुझना जाइत अछि जे कृष्णजन्म-कर्त्ता मनबोध झा ओएह थिकाह जे पंजीमे "भाषा कवि" भोलन कहने छथि । हिनक परिचय देखलासँ बूझि पड़ैत अछि जे पितृपक्षमे तँ नहि किन्तु हिनक मातृपक्षमे मिथिलाभाषाक सेवाभाव ओ कवित्व प्रतिभा पूर्णरूपेँ विद्यमान छलैन्हि । ई छलाह दौहित्र "संकराढ़ी-परहट"-मूलक महामहोपाध्याय रैआ झाक जे "कवीन्द्र" रघुनाथ झाक बालक ओ "रुक्मिणी-स्वयंवर" नामक प्रसिद्ध मैथिली नाटकक रचयिता महामहोपाध्याय रमापति उपाध्यायक दौहित्र छलाह । म० म० रैया झाक वैमात्रेय भाए म०म० देवानन्द झाक रचित एक गोट नाटक "उषाहरण" अछि सेहो प्रसिद्ध अछि । एहि रैआ झाक अपर वैमात्रेय भाए भवानन्द झाक दू गोट कन्याक विवाह मिथिलेश महिनाथ ठाकुर ओ तनिक अनुज मिथिलेश महाराज नरपति ठाकुरसँ छलैन्हि । अतएव रैआ झाक दौहित्र भाषाकवि भोलन प्रसिद्ध मनबोध झा मिथिलेश महाराज राघव सिंह बहादुरक कनिष्ठ समसामयिक छलाह होएत ओ महामना ग्रिअर्सन साहेब जे लिखैत छथि जे हुनक देहान्त सन् 1788 इ० मे भेल से जँ सत्य तँ निश्चय भोलन झा बड़ वृद्ध भए देह त्याग कएल ।

मैथिली साहित्यमे कृष्णजन्मक महत्त्व अछि ओहि नव साहित्यिक ध ाराक हेतु जकरा ई प्रवाहित कएलक । ओना तँ मिथिलाभाषामे सत्साहित्यक परम्परा आइ सहस्त्रावधि वर्षसँ निरवच्छिन्नरूपेँ चल आबि रहल अछि तथा आरम्भमे ई सकल साधारणक हेतु तदुपयुक्ते भाषामे रचित होइत छल परन्तु अभिनव जयदेव विद्यापति ठाकुरक रचना ताहि रूपेँ लोकप्रिय अथवा चमत्कारक भेल जे ताहिसँ पूर्वक सबटा काव्य क्रमशः विस्मृत ओ लुप्त भए गेल ओ तहिआसँ मैथिली साहित्यक एक मात्र आदर्श ओएह विद्यापति ठाकुरक रचना भए गेल। ओ छल पण्डितक भाषामे संस्कृत साहित्यसँ अनुप्राणित शृंगाररस प्रधान गीतमय ओ एहि शताब्दीक आदि धरि ओही आदर्शकेँ समक्षमे राखि कविलोकनि अपन-अपन रचना करैत छलाह । मनबोध प्रथम कवि छलाह जे अपन कृष्णजन्ममे शृंगाररससँ शून्य भक्ति रसमय एक छन्दमे जे राग-ताल प्रभृति गीतक विषयसँ रहित अछि अपन एक गोट नूतन शैलीमे काव्यक रचना कएलन्हि । ई छन्द आब चौपाइ कहल जाइत अछि ओ आइसँ सहस्त्र वर्ष पूर्वहुक बौद्धगानमे एहि छन्दक प्रयोग भटैत अछि परन्तु ताहि दिन ई रागहिक भेद बुझल जाइत छल ओ एकर नाम चौपाइ से [illegible] थीक । एहू कृष्णजन्ममे एकर नाम चौपाइ नहि भेटल अछि परन्तु एक[illegible]मे समस्त लिखल महाकाव्यक शैलीपर रचित ई मैथिलीक प्रथमे ग्रन्थ थीक ओ महाकाव्यक सबटा लक्षण नहिओ घटैत अछि तथापि हम एकरा मैथिलीक प्रथम महाकाव्य सएह कहब । एही रसक, एहि छन्दकेँ प्रधानता दए, एहिना लोकभाषामे, आगाँ आबि कवीश्वर चन्दा झा अपन रामायणक रचना कएलैन्हि जे सम्प्रति मिथिलाभाषाक प्रायः सबसँ अधिक लोकप्रिय ग्रन्थ अछि परन्तु ताहिसँ पूर्व इएह कृष्णजन्म एहि भाषाक सबसँ विशेष रोचक ओ प्रचलित काव्य छल जे गाम-गाममे आबालवृद्धवनिता सब प्रेमसँ पढ़ैत छल, राग लगाए लगाए गबैत छल, कण्ठस्थ कए कए रखने छल । विद्यापतिक रचना-शैलीकेँ छोड़ि एक गोट नवीन काव्य-रचनाक शैलीक प्रवर्त्तक होएबाक कारणेँ एहि कृष्णजन्मक मैथिली साहित्यमे बड़ विशिष्ट स्थान छैक ओ काव्य गुणहुमे ई ग्रन्थ तेहन मधुर, ललित, प्रसाद गुणसँ परिपूर्ण, सरल ओ रोचक भाषामे निर्मित भेल अछि जे उचिते एकर एतेक प्रचार ओ सम्मान होइत आएल अछि ।

एहि कृष्णजन्मक कथा मुख्यतः श्रीमद्भागवतक दशम स्कन्ध ओ हरिवंशसँ

लेल गेल अछि । परन्तु हमरा दृष्टिमे एहिमे कथाक ओतेक चमत्कार नहि अछि । ई काव्य अछि मुख्यत: वर्णनात्मक ओ एहिमे सबटा चमत्कार ओहि वर्णनहि सबमे अछि । कथामे वार्त्तालाप मुख्य अंश होइत अछि ओ से एहिमे ने ततेक अछि ने जे अछि से एतेक रोचक अछि । वर्णन सब अवश्य सजीव अछि जे तदुपयुक्त भाषामे उपनिबद्ध वर्णित विषयक चित्र आँखिक समक्ष उपस्थित कए दैत अछि । भाषा से एकर विशुद्ध मिथिलाभाषा अछि ओ अनेको संस्कृत तत्सम शब्दकेँ तद्भव बनाए प्रयोग कएल अछि जे पण्डित समाजमे अशुद्ध बुझल जाएत परन्तु जकर प्रयोग साधारण लोक ओहिना करैत अछि । परन्तु तेँ काव्यक गुणलालित्य किंवा प्रसाद एहिमे नहि अछि से के कहत ? काव्यक शोभा बढ़बैत अछि अलंकार, से केहन चमत्कारक उपमा ओ उत्प्रेक्षा सब एहिमे अछि से जे एकर अनुशीलन करताह से स्वयं बूझि लेताह । प्रसंगक अनुकूल शब्दक विन्यास एकर एक गोट विलक्षणता छैक जकर प्रभाव पाठकपर सबसँ शीघ्र पड़ैत छैक ओ पाठमे रोचकता आनि दैत छैक । बीच-बीचमे कहबी सबहिक प्रयोग एकरा स्वाभाविकता प्रदान करैत छैक । काव्यक आनन्दक संग-संग ई अपन भाषामे लिखल अछि, जेना बजैत छी तहिना ई काव्य प्रचलित भाषामे उपनिबद्ध अछि । प्रत्येक भाषामे व्यंग्य ओ ध्वनिक अपन-अपन भिन्न प्रकार होइत छैक से सब लोक-भाषामे रचित काव्यमे सुलभतासँ बोध होअए लगैत छैक, काव्य जतेक अधिक प्रचलित भाषामे लिखल जाएत ताहिमे ततेक बेसी आनन्द होएतैक । इएह थिकैक एहि कृष्णजन्मक लोकप्रियताक रहस्य । मनबोध एहि अंशमे प्राय: कवीश्वर चन्दा झाकेँ छाड़ि सबसँ बेसी चमत्कार देखाए गेल छथि ओ उचिते हुनक काव्य एतेक दिनसँ एतेक व्यक्तिकेँ सत्काव्यक रसास्वादन कराए रहल अछि ओ आशा अछि जे जाधरि मिथिलाभाषामे काव्यक रसास्वादन होइत रहत ई कृष्णजन्म एही रूपेँ समादृत रहत ।

प्रो० श्री रमानाथ झा

(स्वदेश : वर्ष-१, अंक-६, वर्ष-१९४८)



परिशिष्ट-४

कृष्णजन्मक भूमिका

मिथिलाक लोकभाषाक विकासक्रम एक सहस्राब्दीक इतिहासक आलोडनसँ लक्षित होइछ। जाहि समयमे दर्शन-काननक पञ्चानन बनल, मैथिल विद्वानक संस्कृत-निनादसँ देश-दिशा प्रतिध्वनित छल, ताहू दिन (९म शतब्दीमे) द्वादशदर्शन टीकाकार वृद्ध वाचस्पतिमिश्रहु सन विद्वानकेँ अपन तर्ककेँ बोधगम्य बनयबाक हेतु 'निगड हड़ी इति भाषायाम्' द्वारा लोकवाणीक अनुगमन करय पड़ैत छलन्हि। जाहि कालमे मिथिलाक साधना आगमशास्त्रक माध्यमेँ बौद्धपद्धति सँ प्रभावित छल ओहू सिद्धकाल (९-११ श०) मध्य चर्यापदक गान लोकभाषहिक बलेँ प्रचलित भेल। जाहि समयमे कृषक-समाजक काज ज्योतिषशास्त्रक आधारपर संचालित छल ओहू (११-१२ श०) समयमे व्यावहारिक जीवनक आधार डाकक जनवाणी छल। जखन पुनि वर्ण-वर्णनाक हेतु आकर ग्रंथक प्रयोजन पड़ल तखनहु (१४ श० मे०) कविशेखरकेँ लोकभाषहिमे साहित्यिक रत्नक ग्रन्थना करय पड़लन्हि। तदुत्तरे नागर मन मोहबाक लालसा जखन कविप्रतिभामे उद्दीप्त भेल तखन अभिनवजयदेवहुकेँ 'सबजनमिट्ठा देसिल वअना'क प्रयोग इष्ट रहलन्हि। आगहु जखन कवि नाटककारक भारतीकेँ 'आशूद्रान्त' प्रचार अपेक्षित भेलन्हि तँ हुनकहु सभक कण्ठसँ भाषागीतक स्वर-ध्वनि गूंजित भेल। एवं नवम शताब्दीसँ सत्रहम शताब्दी धरि मिथिलामे कखनहु संस्कृत-सागरमे बुद्बुद जकाँ, कखनहुँ संस्कृत-सरिताक तरंग जकाँ, कखनहु स्वतन्त्र स्रोत जकाँ, कखनहु समानान्तर धारा जकाँ लोकभाषा प्रवाहित होइत रहल।

एही लोकभाषा-सिक्त साहित्यक्षेत्रक पृष्ठभूमिमे अवतीर्ण होइत छथि कवि मनबोध। हुनक उर्वर रचनामे मैथिलीक आधुनिक रूपरेखा, परिवर्तित भावरूचिक वेषभूषा स्फुट रूपेँ दृष्ट होइछ। कविक काव्यप्रबन्ध पूर्वरंगक संगीतक इंगितपर नहि, छन्द-बन्धक उन्मुक्त वातावरणमे विकसित लक्षित होइछ। एहि दृष्टिएँ आधुनिक मैथिलीपर जतेक प्रभाव ज्योतिरीश्वर-विद्यापतिक नहि,

गोविन्ददास-रामदासक नहि, उमापति-नन्दीपतिक नहि, ततेक मनबोधक पड़ल अछि। ई स्वाभाविको थिक जे भाषाक्षेत्रक अतिवृद्धप्रपितामह लोकनिक अलक्षित संस्कारसँ अधिक पितामहक संस्कार आधुनिक मैथिलीसन्ततिपर विशेष रहय।

कवि मनबोध पलिवाड़मूलक ज्योतिर्विद् सोनमणि झाक बालक छलाह। महाराज नरेन्द्रसिंहक समकालिक, 18म शताब्दीक पूर्वभाग हिनक समय मानल जाइछ। पुत्रपक्षक परम्परा नहि रहलैन्ह परञ्च कन्यापक्षक परम्परामे खण्डवलाकुलसँ सम्बद्ध कहल जाइत छथि। पंजीपुस्तकमे हिनक नाम भाषाकवि भोलन' कहंल गेल अछि। ई ज्योतिषशास्त्रक सेहो विद्वान छलाह। हिनक किछु स्फुटगीत सेहो उपलब्ध अछि जे विद्यापति-परम्पराक राग-लय एवं रस-भावक अनुसरणमे रचित अछि। किन्तु हिनक मौलिकता अछि प्रबन्ध काव्यक प्रवर्तयिताक रूपमे। बुझि पड़ैछ, हिनका समयमे जे किछु लोककाव्य वीरपुरुषक कीर्तिगाथामे प्रचलित छल तकरा ई पौराणिक आधारपर साहित्यिक क्षेत्रमे प्रतिष्ठित कयल। ओ भगवान कृष्णहुक चरित्रकेँ परम्परागत शृंगारिकताक वातावरणसँ बहिर्भूत कय लोकनायकक रूपमे समयोचित अंकित कयलन्हि। ओ गोकुल-वृन्दावनहुक लीलामे शृंगारक्रीड़ाक नहि, प्रत्युत दानवदमनलीलाक विवरण देलन्हि। हिनक समयमे वैदेशिक आक्रमण ओ विधर्मी शासनक क्रूरतासँ जेना भारतवसुन्धरा दलित मर्दित छल, मिथिलाक कन्दर्पी घाटमे घनघोर युद्ध मचल छल, तकर प्रतीकात्मक वर्णन कंसक दुराचारसँ कय, मगहपतिक दुर्ग्रहसँ कय, पुनि महापुरुष कृष्णक **'विनाशाय च दुष्कृताम्' 'सम्भवामि युगे युगे'** क सन्देश अपन रचनासँ देल–

'धरनी भार बेआकुल भेली, सुरभि रूप धय सुरपुर गेली'
'भार दुबरि तन थरथर कांप, बजइत नोर नयन दुहु झाँप
कहय लागु धरिनी हरि हेरी, हम हयब मगन रसातल फेरी'
'सर्वसहा नामसौं आज, सपथ करिअ हम अयलहुँ बाज'
'करुणामयकाँ करुना भेल, धैरज बहुत धरनिकाँ देल
धरनी किछु दिन धैरज धरब, हम अवतरब भार सब हरब'
'भन मनबोध मगहपति फिरल, घनघन जे एलाह से मरल'

सम्पूर्ण कृष्णजन्म एके छन्दमे गोकुल मथुरा द्वारकाक परिधिमे रचित अछि। मुख्य कथा अछि कृष्णजन्मक, कंसवध ओ ताहिसँ रोषित मगधपति

जरासन्धक बध-पराभवक । भागवत ओ हरिवंशपुराणक आधारपर रचित अछि। अध्यायक अन्तमे कतहु 'भागवते महापुराणे दशमस्कन्धेकृष्णजन्मनि भाषायाम्' कतहु 'हरिवंशे कृष्णजन्मनि भाषायाम'क उल्लेख अछि । ई लाक्षणिक काव्य-महाकाव्यक रूपेँ नहि, पौराणिक कथाक अनुरूपेँ रचित अछि । तेँ सर्गबद्ध नहि, अध्यायनिबद्ध अछि । प्रतिसर्गमे विभिन्न छन्दवृत्त नहि, पुराणानुसारी अनुष्टुप् श्लोकानुसारी भाषामे पूर्वतः प्रचलित एके छन्दमे रचित अछि । ऋषि-ऋतुक वा सन्ध्याप्रभात आदिक सांगोपांग वर्णन नहि, प्रकृतिवर्णन प्रसंगागत अछि । रससृष्टिक प्रोचना नहि, अवतारीक चरित-माहात्म्यक योजना अछि । काव्यकलाक अलंकार चमत्कार नहि, लोकजीवनक सहज संस्कार अछि । अतएव एकरा लक्षणानुसारी महाकाव्य खण्डकाव्य नहि, पौराणिक कथाकाव्य कहबे उपयुक्त थिक ।

मनबोध भाषाकवि कहि सम्बोधित छथि । वास्तवमे हिनक कवितामे लोकभाषा निखरि कय, रूप-परिपक्व भय प्रयुक्त अछि । तत्कालीन साहित्यिक संस्कृत एवं अवहट्ट, जे संयुक्ताक्षरक प्रयोगक कारणेँ, कर्णकटु प्रतीत होमय लागल छल से घसि कय, कोमल उच्चारणसँ मजि चिकनाकय, लोककंठक अनुकूल बनि गेल अछि । यथा–

कुमारी–कुम्मरि–कुमरि, हस्ती–हत्थी–हाथी, अर्जुन–अज्जुन–अरजुन, खड्ग–खग्ग–खड़ग, दुग्ध–दुद्ध–दुध, कार्य–कज्ज–कारज, ब्राह्मण–बम्हन–बाभन, वत्सवच्छ–बछरू, दर्प–दप्प–दाप, मल्ल–माल, प्रभृति रूपेँ मुखसुखक हेतु व्यवहृत भेल अछि । जे संस्कृत शब्द उच्चारण सुगम बुझना गेल से तत्सम रूपहुमे प्रचलित अछिः यथा–शंका, त्रिभुवन, अंजलिबद्ध, प्रणमो, धर्म, समुद्र, दुर्ग आदि । कतहु ऋकार स्वरकेँ व्यंजनात्मक प्रयोग, क्षकेँ छ, ज्ञकेँ गेअ यथा–त्रिण, भ्रित्य व्रीक, खेमिअ, छत्री, रच्छक, गेआन आदि ।

एवं तालव्य मूर्धन्यकेँ दन्त्य आदिक योजना कय भाषाकेँ सर्वसुगम बना देल गेल अछि । भाषाक सरलीकरण जे काज पूर्वोदित (ज्योतिरीश्वर-विद्यापति) आरम्भ कयने छलाह से मनबोधक रचनामे जेना पूर्णता प्राप्त कय चुकल हो । तेँ ई कहब असंगत नहि होयत जे वर्तमान मैथिली बहुत किछु मनबोधक सरणिपर चलित अछि । वर्तमान मैथिलीक परिष्कर्ता कवीश्वर चन्दा झा, मनबोधसँ ने कवेल रामायणक प्रमुख छन्द अपनाओल प्रत्युत भाषाक रूपराशि, वाग्धारा एवं क्रियाध्वनि सबहुक नीक जकाँ अनुसरण कएल ।

भाषाक मौलिकता वा सप्राणता थिक ओहिमे प्रचलित वाग्धारा; तकर प्रयोगमे मनबोध अनुकरणीय मानल जायताह । किछु मात्र उदाहरण–

जुरायल कान, तकर घमर्थनि भेल, उकठी लाड़ी, जिव पड़ु गाढ़, विध ाता वंक, विहुँसि टुसि देल, तोहर जिवकाल, अरबधि तनिक ममोड़ब ठोंठ, जिबक जंजाल, लाजक लेल मुख हेरलो न होय, बरनिअ तोँ बित बारह वर्ष धरि एक ककरहु किछु नहि फुरल, पहरेक अड़रा करड़ा पड़ल, एहिसँ सुखद साप बरु खाँय, कहिअ से करिअ, त्रिनवत् कय लेख, जिव जाति, आनन्द उर न समायल, सबहुकँ जिब पनिछाय, उठि गेल आगि लहरि गेल अंग, आँखि रुधिर भरि आएल, हरषक नोर नयन भरि आएल, हृदय दुसाध भुसा लय मलल, देखि भरि दीठी, सब गोड़हा गोबर भए गेल, टकटक हेरथि, जिब दुगदुग करए, झकझक सुझइछ, देखइत मन होअ देखितहि रहिअ आदि आदि, अनुकरणनात्मक ध्वनिक वाग्धारा–यथा: सरसर कय पैसलि घर धाय, कलबल कए, दुरदुर आदि ।

लोकोक्ति सामाजिक चिन्तन दिशाकेँ व्यंग्यसँ, तीक्ष्ण कटाक्षसँ, तिखचोख उपमानक योजनासँ प्रभावी बनबैछ । ओकर प्रचुर प्रयोग कृष्णजन्ममे भेटत । दिग्दर्शन मात्र–

बाभन पोथी छत्री तीर: नेनहि सिख चरबाहि अहीर, गोपजाति की कर पुजि देव: भाव–भगतिसँ गिरिवर सेव, नेरु हरेएने जेहेन धेनु गाय, मर मुड़हा तँ सभ भल होअ, बड़ घोघट किछु तकलो चाहिअ, थिक पछुआड़ आँखिकाँ पीठी, जपबह रुद्र भखब हम सुद्र, घोड़ कुदए ने बाखर कूद, कँटगर तरु केओ अङना राख, आदि आदि ।

स्थानसंकोच रहितहुँ, एतय मनबोधक किछु सरस, अलंकृत एंव विलक्षण प्रतिभाप्रभावक रोचक पंक्तिक उद्धरणसँ अभिव्यक्तिक निपुणता सहजहिँ लक्षित होयत–

अनुप्रास आदि शाब्दिक अलंकार–मातल भुतल सुतल रखबार, सारद ससधर जगमग राति, असरन सरन चरन देल फेकी, टकटक हेरथि सकटक निकट, भय गेल बाँक टाँक सभ टुटल: सकटक अँकट वकट सभ छुटल–आदि ।

उपमा रूपक उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति समुच्चय आदि विविध अर्थालंकार–उजर कोदरिकट घन सन दाँत, जनि उड्डगन बिच पूरन चन्द, जनि छन मध्य बखो

गेल उपटी, जनि झपटल अछि बाज बटेरी, नव जलधर अपराजित फूल : अतसीकुसुम गात समतूल, मन भरि रंक रतन जनु लुटल, तारक तरु जनि लवनी लागल, कंस बाघ हरिनी हम खोरी, मुकुटक निकट मयूरक पाँखि : सरदक नलिन मलिन करु आँखि, सहस वदन हो त ओ रूप कहिअ, दिनमान बिनु दिन ससि बिनु राति: हरि विनु व्रज तिनु एके भाँति, सोनित सरित तुरित बहि गेली : जमुना छुटलि सरस्वति भेली–आदि आदि ।

शब्दार्थ विच्छित्ति–कुब्जा छुटि अब्जा भय गेल, ...धए लेल गिरि ठामहि ठाम: ओहि दिनसँ गिरिधर भेल नाम, एहन करूर दोसर नहि फूर, कोन धल नाम अकरूर,–आदि ।

प्रकृति-वर्णन, भने ओ जड़ प्रकृति हो अथवा मानव प्रकृति, मनबोधक रचनामे सहज, सुबोध एवं हृदयावर्जन बनल अछि । अन्धकारक सहज चमत्कार देखू–

सुइ लए बेधिअ गाँथिअ ताग : हाथ छुबिअ तँ हाथहि लाग

सूर्य सुधाकर खोजलों न पाबिअ : कमल कुमुद निसि वासर जानिअ

शैशवक सहज अलंकृत किन्तु चमत्कारी वर्णन–

कतओक दिवस जखन बिति गेल : हरि पुनि हथगर गोरगर भेल

से कोन ठाम जतय नहि जाथि : कय बेरि अङनहुसँ बहराथि

कय बेरि आगि हाथ सौँ छीनु: कय बेर पकला तकला बीनु

कय बेरि साप धरय पुनि जाथि; कय बेरि चून दही वदि खाथि

महिसिक दुध दधि घृत खिरि खाए : बढ़नुक दिन दिन बढ़ले जाय

उक्तिमे स्वाभाविकता, ग्राम जीवनक सहजता ओ बाग्–विदग्धता–

‘सहस्र वदन हो त ओ रूप कहिअ: देखइत मन हो देखितहि रहिअ’

‘ओतए सुनिअ एक रमनि अनूप: जकर पाएर सन मोर मुहरूप’

‘कोपहु कटु नहि भाखथ कबहुँ : सहथि कहिअ जत हमरा सबहुँ’

‘एहि असुरक डरेँ इन्द्र डेराथि : पचइन्ह नहि डरेँ जे किछु खाथि’

'विनु दामोदर जे व्रज जाय: धिक धिक तकर बाप ओ माय'

'सर्व-सहा नामसौं आज : सपथ करिअ हम अयलहुँ बाज'

'अपना जिबसौं तनय परान: पर थिक मै जग के नहि जान'

ठेठ मैथिलीक प्रयोग मनबोधक भाषाक विशेषता थिक । संज्ञा, क्रियापद, क्रियाविशेषण, नामधातु, ओ अनुध्वनिक विलक्षण शब्द-प्रयोग एहिमे भेटत। यथा–

संज्ञाशब्द–सरौँ नुआ जुआ माँच सिढ़ी बहु थाँबहु बहिनोय उखरि डोरि बथान पाँज झाँट बसात बछरू गीतनाद बेआल झटहा चेप सेप ठाम कान्ह कन्हौर हकार गोआर नग्र सबद छन सोहर बखो साप फुफकार चरबाहि जुगुति धेआन गेआन विरतांत खंड़ि लगपास टाँक काँट आदि । **विशेषण**–नोरायल तेजायल कोहायल पकसोठ (पकठोस) हथगर गोड़गर मुहबौआ डोमकछ (नाच) आदि । **क्रियाविशेषण**–एकटक भरिपोष भरिकछमारि दरबर (दौड़ि)। **क्रियापद**–कोहाथि उपटी झाँपि डाँडि खसल ओंघराओल गुड़कल बरजिअ छीअ बड़राएल परचारी कुदल बजारि रेकितहि पनिछाए मिझराएव झपटल जुझल पटकलह चुमाओल फोयब बाबि भाष आदि । **ध्वनिप्रधान**–धकधक दुगदुग सनसन धन-धन । **अव्यय**–आगु पाछु काली (काल्हि) हलु कीदहु पुनु साथ अब आब आदि । **प्रतीकात्मक**–हंस (प्राण) चापश्चात । **सर्वनाम**–हुनिहुनि ओति आदि ।

अभिव्यक्तिक व्यापकताक हेतु आनहु, तत्काल आयातित विदेशी (अरबी फ़ारसीक) शब्दहुकेँ अपनयबाक प्रवृत्ति अछि । किन्तु तकर अपन भाषाप्रकृतिक अनुकूल चिकनाय-गढ़ाय जेना इयार (यार), मोसाहेब, अदलबदल, सलाम, चुनरी, सरकार, लगायब आदि आदि ।

'कृष्णजन्म' 18 अध्यायमे उपलब्ध अछि । किन्तु भाषा-भाव, कथा-रचना-शैलीसँ ई स्पष्ट भय जाइछ जे 10 अध्यायक बाद जे किछु अछि से मनबोधक मूल नहि, क्षेपके थिक अथवा मूलसँ विशेष मिश्रणे अछि । कथा असंबद्ध, भाषा फेंटल फांटल, छन्द भग्न, जकरा जेना मन भेलैक तेना जोड़ने ल हो । किछु एहनो रोचक पंक्ति प्राचीन लोकमुखें एम्हर सुनल जे मनबोध

[illegible]

— सुरेन्द्र झा 'सुमन'

[illegible] ([illegible])